प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय 1

विश्वास के सूत्र

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..1
इतिहास..2
विकास..2
उद्देश्य...3
पवित्र वचन 4
पारंपरिक शिक्षाएँ...5
प्रेरितों का विश्वास-कथन 7
रूपरेखा...9
परमेश्वर..9
त्रिएकता..9
व्यक्तित्व..11
कलीसिया 12
सहभागिता...13
धर्मशिक्षा को बनाए रखना...13
उद्धार 14
महत्व...16
आधार..16
धर्मविज्ञानीय स्तर...17
तार्किक आधार..18
सार्वभौमिक..19
नया नियम 20
कलीसिया इतिहाश्..21
वर्तमान...22
एकता में बांधना 23
निष्कर्ष 25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय एक

विश्वास के सूत्र

परिचय

क्या आपने कभी सोचा है कि क्या ऐसी बात है जो एक वृक्ष को वृक्ष बनाती है? या एक घर को घर? या फिर एक व्यक्ति को व्यक्ति? या दूसरे रूप में पूछें तो, एक वृक्ष को वृक्ष या एक घर को घर कहने के लिए उनमें कौन-कौन सी विशेषताएं होनी चाहिए? ये ऐसे जटिल प्रश्न हैं जिन पर दर्शनशास्त्री वर्षों से चिंतन करते आ रहे हैं। और जब हम मसीही धर्मविज्ञान का अध्ययन करते हैं तो हम भी ऐसे ही प्रश्नों का सामना करते हैं। आखिरकार, अगणित "मसीही" कलीसियाएँ हैं, और उनमें से अधिकांश अनेक बातों में परस्पर असहमत होती हैं। अत: यह पूछना उचित है, "मसीही धर्मविज्ञान के लिए कौन-कौन सी धर्मशिक्षाएं मूलभूत व आवश्यक होती हैं?"

जब हम इस प्रश्न को पूछते हैं तो निःसंदेह हमें इस बात में स्पष्ट होना चाहिए कि धर्मविज्ञान की गहरी जानकारी न होने के बावजूद भी लोग उद्धार पा सकते हैं। मसीही बनने के लिए मसीह के प्रति हमारा समर्पण पर्याप्त है। इसके साथ-साथ, यह कहना भी उचित है कि "मसीही" कहलाने से पूर्व ऐसी कई मूलभूत बातें हैं जो हमारी धर्मविज्ञान प्रणाली में विद्यमान होनी चाहिए। और कलीसिया की प्रारंभिक सदियों से ही प्रेरितों के विश्वास-कथन ने इन मूलभूत बातों का उपयोगी सारांश प्रदान किया है।

प्रेरितों का विश्वास-कथन, मसीहियों द्वारा विश्वास किया जाने वाला जाना-माना और प्रख्यात सारांश, पर आधारित श्रृंखला का यह पहला अध्याय है। इसका शीर्षक हमने रखा है, विश्वास के सूत्र, क्योंकि हम प्रेरितों के विश्वास-कथन को सूत्रों या धर्मशिक्षाओं के एक ऐसे सारांश के रूप में देखेंगे जिनका पालन उन सब के द्वारा किया जाना आवश्यक है जो स्वयं को "मसीही" कहलवाते हैं। कलीसिया की प्रारंभिक सदियों के दौरान प्रेरितों का विश्वास-कथन अनेक रूपों में प्रकट हुआ। परन्तु 700 ईस्वी के दौरान लेटिन में इसे स्थाई रूप में घोषित किया गया। इसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है:

> मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,
> जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।
> मैं उसके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ।
> जो पवित्र आत्मा से कुवांरी मरियम के द्वारा पैदा हुआ।
> उसने पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा, क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया
> और गाड़ा गया;
> वह अधोलोक में उतरा।
> तीसरे दिन वह मृतकों में से फिर जी उठा।
> वह स्वर्ग में चढ़ गया।
> और वह सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।
> जहां से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।
> मैं पवित्र आत्मा में,
> पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया,
> पवित्र संतों की संगति,
> पापों की क्षमा में,
> देह के पुनरुत्थान में
> और अनन्त जीवन में विश्वास करता हूँ।

विश्वास के सूत्रों के रूप में प्रेरितों के विश्वास-कथन पर हमारा विचार-विमर्श तीन भागों में विभाजित होगा। सर्वप्रथम हम विश्वास-कथन के इतिहास के विषय में बात करेंगे। द्वितीय, हम इसके कथनों का अवलोकन प्रदान करेंगे। और तृतीय, हम वर्तमान में इसकी धर्मशिक्षाओं की महत्ता पर ध्यान देंगे। तो आइए, प्रेरितों के विश्वास-कथन के इतिहास से प्रारंभ करें।

इतिहास

जब हम प्रेरितों के विश्वास-कथन का सर्वेक्षण करते हैं, तो हम दो बातों पर ध्यान देंगे। एक ओर हम विश्वास-कथन के विकास, अर्थात् उसके लेखक और लिखे जाने के समय पर ध्यान देंगे। और दूसरी ओर विश्वास-कथन के उद्देश्य पर ध्यान देंगे और देखेंगे कि क्या कारण था कि कलीसिया ने इसकी रचना करना और इसे इस्तेमाल करना महत्वपूर्ण समझा। पहले हम प्रेरितों के विश्वास-कथन के ऐतिहासिक विकास की ओर मुड़ते हैं।

विकास

एक समय में ऐसा माना और सिखाया जाता था कि प्रेरितों के विश्वास-कथन की रचना पहली सदी में प्रेरितों द्वारा ही की गई थी। यहां तक कहा जाता था कि प्रत्येक प्रेरित ने विश्वास-कथन के 12 कथनों के एक-एक कथन की रचना करने में योगदान दिया। परन्तु इस घटना का कोई प्रमाण नहीं पाया जाता, और न ही कि कोई प्रेरित इसमें प्रत्यक्ष रूप में सम्मिलित था। परन्तु यदि प्रेरितों ने इस विश्वास-कथन को नहीं लिखा तो फिर किसने लिखा?

> प्रेरितों के विश्वास-कथन की रचना किसने की यह एक असुलझा हुआ प्रश्न है क्योंकि इसके किसी एक लेखक का नाम उपलब्ध नहीं हैं। यद्यपि निश्चित रूप से ये वे प्रश्न हैं जो मसीह के चालीस से पचास वर्षों के पश्चात् तक बपतिस्मा पाने वाले लोगों से पूछे जाते थे। अतः उससे यह पूछा जाता था, क्या तुम परमेश्वर पिता पर विश्वास करते हो जिसने आकाश और पृथ्वी की रचना की है? और हम इस विषय में इसलिए जानते हैं क्योंकि अनेक लोग अपने बपतिस्मा के अनुभव के विषय में बात करते हुए इस प्रकार के अनेक प्रश्नों का उल्लेख करते हैं। और 200 ईस्वी में टरटूलियस ने प्राचीन रोमन विश्वास-कथन का उल्लेख किया जो प्रेरितों के विश्वास-कथन से काफी मिलता-जुलता है और वह उसका उल्लेख उन बपतिस्मा के प्रश्नों के विषय में करता है, "क्या तुम विश्वास करते हो," "क्या तुम विश्वास करते हो।" प्रेरितों के विश्वास-कथन का प्रथम उल्लेख रूफिनस नाम के एक व्यक्ति द्वारा 390 ईस्वी में पाया जाता है, और वह उस कहानी के बारे में बात करता है कि बारह प्रेरितों में से प्रत्येक, मत्तियास भी जिसने यहूदा का स्थान लिया, ने विश्वास-कथन में एक-एक अभिपुष्टि का योगदान दिया। इस बात का वास्तव में कोई प्रमाण नहीं है, परन्तु यह विचार कि इन अभिपुष्टियों का उल्लेख प्रेरितों के समय में भी पाया जाता था, एक अच्छा आधार है।
>
> डॉ. जॉन ओसवाल्ट

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रारंभिक मसीहियों के लेखन में आधारभूत धर्मशिक्षाओं की अनेक सूचियां हैं जो प्रेरितों के विश्वास-कथन से काफी मिलती-जुलती हैं। एक ओर विश्वास के नियम हैं जो कुछ विवरण के साथ मूलभूत धारणाओं को बताते और स्पष्ट करते हैं। प्रारंभिक कलीसियाई अगुवों के लेखन दर्शाते हैं कि विश्वास के लिखित नियम उन कलीसियाओं की धारणाओं और क्रियाओं का सारांश थे जिन्होंने उनकी रचना की थी। उदाहरणत: ऑरिगन अपनी पुस्तक ऑन फर्स्ट प्रिंसिपल्स के प्रारंभ में विश्वास के एक नियम को शामिल करता है, और आयरेनियस अपनी प्रसिद्ध पुस्तक अगेंस्ट हेरेसिज़ के अध्याय 10 में एक विश्वास के नियम को शामिल करता है। विश्वास के इन नियमों को कलीसिया की शिक्षाओं को बनाए रखने के लिए रखा गया था, और कलीसिया के लोगों, विशेषकर अगुवों को प्रशिक्षित करने में प्रयोग किया जाता था। प्राय: ये नियम एक मंडली से दूसरी मंडली में भिन्न-भिन्न पाए जाते थे। सामान्यत: उनमें महत्वपूर्ण धर्मशिक्षाओं की अभिपुष्टियां, और नैतिक शिक्षाएं तथा परंपराएं शामिल होती थीं।

दूसरी ओर कुछ प्राचीन धर्मशिक्षारूपी सूचियां विश्वास-कथनों के रूप में हैं। ये वे छोटी सूचियां थीं जो कलीसिया के विश्वास के नियम के धर्मशिक्षा रूपी भागों का सारांश प्रदान करती थीं, विशेषकर इसके सबसे महत्वपूर्ण भागों को। प्राय: उन्हें आराधना-पद्धति के संदर्भ में पढ़ा जाता था, जैसे कि बपतिस्मा। पहली और दूसरी सदियों में, ऐसा होता होगा कि प्रत्येक मंडली का अपना स्वयं का विश्वास-कथन हो, या वचन के मूलभूत सत्यों को ढ़ालने का तरीका हो। परन्तु तीसरी या चौथी सदी तक कुछ विश्वास-कथन काफी महत्वपूर्ण बन रहे थे और कई कलीसियाओं में उनका प्रयोग हो रहा था।

एक विश्वास-कथन जिसने काफी महत्ता प्राप्त की वह रोम की कलीसिया का विश्वास-कथन था। यह विश्वास-कथन प्रेरितों के विश्वास-कथन से इतना मिलता-जुलता है कि कुछ विद्वान मानते हैं कि प्रेरितों का विश्वास-कथन, रोमन विश्वास-कथन का कालांतर रूप ही है।

परन्तु इसकी छोटी शुरुआत के बावजूद भी, जो बात संदेहरहित है वह यह है कि प्रेरितों का विश्वास-कथन अंत में बहुत अधिक इस्तेमाल होने लगा, विशेषकर पश्चिम की कलीसियाओं में। प्रारंभिक संदियों में, अलग-अलग कलीसियाओं में इसके शब्दों में अंतर पाया जाता था। परन्तु आठवीं सदी में इसे एकसमान स्तर में रूपांतरित कर दिया गया जिसका प्रयोग हम आज भी करते हैं।

अपने मन में विश्वास-कथन के इस ऐतिहासिक विकास को रखते हुए, हमें प्रेरितों के विश्वास-कथन की रचना के उद्देश्य और प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए।

उद्देश्य

हमारे दिनों में अनेक लोग विश्वास-कथनों के प्रति असमंजस में हैं, और यह समझना मुश्किल नहीं है कि क्यों? यद्यपि बहुत ही कम लोग खुलकर यह दावा करेंगे कि विश्वास वचन में भी वचन जितना ही अधिकार पाया जाता है, परन्तु कभी-कभी अनेक जानकार मसीही भी कुछ विश्वास-कथनों को ऐसा मानते हैं जैसे कि वे बाइबल के समान ही हों। परन्तु किसी भी विश्वास-कथन को सिद्धांत या व्यवहार में इस स्तर तक कभी नहीं उठाया जाना चाहिए।

बाइबल हमारे लिए एकमात्र प्रेरणा-प्राप्त, त्रुटिरहित विश्वास और क्रिया का नियम है। दूसरी ओर विश्वास-कथन शिक्षा देने के सीमित साधन हैं जो वचन के बारे में हमारे ज्ञान दर्शाते हैं। और जैसे कि हम देखने जा रहे हैं, प्रेरितों के विश्वास-कथन की रचना इसलिए की गई थी कि मसीही बाइबल की शिक्षाओं को सीखें और उनके प्रति सच्चे रहें।

हम तीन चरणों में प्रेरितों के विश्वास-कथन के उद्देश्य को परखेंगे। पहला, हम पवित्र-वचन को सच्ची धर्मशिक्षा के मूल स्रोत के रूप में देखेंगे। दूसरा, हम कलीसियाओं की पारंपरिक शिक्षाओं को पवित्र-वचन की अभिपुष्टिओं के रूप में देखेंगे। और तीसरा, हम देखेंगे कि प्रेरितों के विश्वास-कथन की रचना का कारण पवित्र-वचन के विषय में कलीसियाओं की पारंपरिक शिक्षाओं का सारांश प्रदान करना था। आइए,

हम इस तथ्य के साथ प्रारंभ करें कि समर्पित मसीहियों ने सदैव यह पुष्टि की है कि पवित्र-वचन हमारी धर्मशिक्षा का आधार है।

पवित्र वचन

तीसरी सदी में प्रारंभिक कलीसिया के अगुवे ऑरिगन द्वारा लिखित पुस्तक ऑन फर्स्ट प्रिंसिपल्स के प्राक्कथन के शब्दों को सुनें:

> जो विश्वास करते हैं . . . मनुष्य को भला और प्रसन्न जीवन देने की प्रेरणा देने वाला ज्ञान किसी और स्रोत से नहीं बल्कि मसीह के शब्दों और उसकी शिक्षाओं से ही प्राप्त करते हैं। और मसीह के शब्दों से हमारा तात्पर्य केवल वे शब्द ही नहीं जो उसने मनुष्य रूप धारण करने के बाद कहे . . . क्योंकि उस समय से पूर्व, मसीह जो परमेश्वर का वचन है, मूसा और नबियों में विद्यमान था . . . स्वर्गारोहण के पश्चात् अपने प्रेरितों के द्वारा उसने बात की।

ऑरिगन ने सिखाया था कि संपूर्ण पवित्र-वचन मसीह का वचन है, और यह सच्ची धर्मशिक्षा का स्रोत है।

और तीसरी सदी के प्रारंभ के बिशप हिप्पोलिटस की पुस्तक अगेंस्ट द हेरेसी ऑफ वन नोयटस के नौवें खण्ड में उसके शब्दों को सुनें:

> भाइयो और बहनों, मात्र एक परमेश्वर है, और उसके विषय में हमें ज्ञान केवल पवित्र-वचन से मिलता है, किसी और स्रोत से नहीं।

प्रारंभिक कलीसियाएँ मानती थीं कि संपूर्ण बाइबल मसीह का वचन है, जो कि प्रेरितों द्वारा विश्वासियों को प्रदान किया गया है। इस विषय में उन्होंने इस तथ्य की पुष्टि की जिसे धर्मविज्ञानी सोला सक्रिपचरा (पवित्र वचन मात्र) कहते हैं। यह वह दृष्टिकोण है कि पवित्र-वचन एकमात्र त्रुटिरहित विश्वास का नियम और किसी भी धर्मविज्ञानीय वादविवाद का निर्णायक विवाचक है।

हम इसका एक स्पष्ट उदाहरण बासिल, जिसे 370 ईस्वी में कैसरिया का बिशप चुना गया था, के लेखनों में पा सकते हैं। बासिल कलीसिया की परंपराओ या रीतियों का मजबूत प्रतिवादी था, और प्राय: अपने विश्वासों को व्यक्त करते थे कि ये परंपराएँ प्रेरितों के समय में भी पाई जाती थीं। तौभी, जब कभी इन परंपराओं की सच्चाई के बारे में प्रश्न उठता था तो वह वचन को ही निर्णायक अधिकार मानकर उद्धृत करता था। वैद्य यूस्ताथियस को लिखे पत्र 189 में बासिल के शब्दों को सुनें:

> परमेश्वर से प्रेरणा-प्राप्त वचन ही हमारे बीच न्याय करे; किसी भी तरफ की धर्मशिक्षाएं परमेश्वर के वचन के साथ सामंजस्य बैठाएं, उसी के पक्ष में हम सत्य का मत डाल देंगे।

यहां बासिल ने स्वीकार किया कि कुछ कलीसियाएं अपने विश्वास के नियम में एक प्रकार के रीतिपूर्ण विचारों की पुष्टि करती हैं, वहीं दूसरी कलीसियाओं की रीतियां उनके बिल्कुल विपरीत हैं। इसलिए उसने इस विवाद को सुलझाने के लिए पवित्र-वचन को उच्चतम अधिकार के रूप में प्रयोग किया।

अपनी संपूर्ण धर्मशिक्षा के लिए प्रारंभिक कलीसिया पूरी तरह से पवित्र-वचन पर ही निर्भर थी। परन्तु पवित्र-वचन की शिक्षा को संक्षिप्त करने और बचाने के लिए वह कलीसिया की पारंपरिक शिक्षाओं पर भी निर्भर रहती थी।

पारंपरिक शिक्षाएँ

अब यहां आश्चर्यचकित होना ठीक ही है कि कलीसिया ने अपनी पारंपरिक शिक्षाओं को बचाए रखना क्यों आवश्यक समझा। क्या बाइबल को बचाए रखना ही काफी नहीं था, और बाइबल को ही अपनी बात कहने दी जाए?

> सटीक, स्पष्ट कथनों जिन पर कलीसिया विश्वास करती है, का प्रतिपादन करना आवश्यक होता है, खासकर इसलिए क्योंकि कई ऐसे झूठे शिक्षक हैं जो ऐसी बातें सिखाते हैं जो प्रेरितों द्वारा सिखाई गई और बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार नहीं होतीं। इसलिए खासकर इन झूठी शिक्षाओं का प्रत्युत्तर देने में, कलीसिया को ऐसे स्पष्ट संक्षिप्त कथन की आवश्यकता थी जिस पर वह विश्वास करती थी।
>
> डॉ. ऐरिक के. थोनेस

> कलीसिया के पास अपने विश्वास के आधार के लिए पवित्र-वचन था, परन्तु निसंदेह, पवित्र-वचन काफी विशाल था और साक्षरता काफी सीमित थी। अत: कलीसिया के लिए यह सर्वोत्तम था कि आधारभूत धर्मशिक्षाओं को एक विश्वास-कथन में संक्षिप्त करे जिससे कि लोग संपूर्ण बाइबल पढ़े बिना ही अपने विश्वास को जान और समझ सकें।
>
> डॉ. रियाड कासिस, अनुवाद

> विशेषकर, प्रेरितों का विश्वास-कथन प्रारंभिक कलीसिया इतिहास में महत्वपूर्ण, यहां तक कि आवश्यक भी था, वचन का मापदंड (कैनन) 397 ईस्वी तक सूचीबद्ध नहीं किया गया था। तो, कलीसिया का आधिकारिक विश्वास क्या था? इसे प्रेरितों के विश्वास-कथन में संक्षिप्त किया गया था। परन्तु उस समय हमारे पास बाइबल थी। तो आगे विश्वास-कथन का प्रयोग करना जारी क्यों रखें? क्योंकि हम लोगों को मसीहियों के रूप में ग्रहण करने से पहले उनसे संपूर्ण बाइबल को समझने की मांग नहीं रख सकते। प्रेरितों का विश्वास-कथन आज भी सरल भाषा में बाइबल की मूलभूत शिक्षाओं को संक्षिप्त करता है। और इस कारणवश, आज भी इसका इस्तेमाल किया जाना आवश्यक है।
>
> डॉ. पॉँल चांग, अनुवाद

झूठे शिक्षकों ने कलीसिया में अनेक समस्याएं खड़ी की थी। कइयों ने तो सुसमाचार के मुख्य पहलुओं को ही नकार दिया था। इन परिस्थितियों के प्रत्युत्तर में, परमेश्वर का भय मानने वाले अगुवों ने पवित्र-वचन की मुख्य शिक्षाओं की छोटे सारांशों में रचना की ताकि सभी मसीही विश्वास की मूल शिक्षाओं को जान सकें और उनकी पुष्टि कर सके। आइए देखें कि अपनी पुस्तक ऑन फर्स्ट प्रिसक्रंपल्स के प्राक्कथन के अन्य खण्ड में ऑरिगन इस समस्या का वर्णन कैसे करता है:

> बहुत से लोग हैं जो सोचते हैं कि वे मसीह के बारे में मत रखते हैं, और फिर भी उनमें से कुछ अपने पूर्वजों से भिन्न सोचते हैं, परन्तु प्रेरितों के उत्तराधिकार से क्रमानुसार मिली हुई कलीसिया की शिक्षा जो आज तक कलीसियाओं में पाई

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> जाती है, अब तक प्रचलित है, उसे ही केवल सत्य के रूप में स्वीकार किया जाए जो कलीसियाई और प्रेरितीय परंपरा से किसी भी तरह भिन्न नहीं है।

यहां ऑरिगन ने जो कहा उस पर ध्यान दें। उसने यह नहीं कहा कि कलीसिया की शिक्षा त्रुटिरहित थी, या फिर कि वह सदैव सिद्ध रहेगी। परन्तु उसने कहा कि कलीसिया की शिक्षा को सत्य के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि यह प्रेरितों के उत्तराधिकार से प्रदान की गई थी और उसके समय तक बनी हुई थी। दूसरे शब्दों में कहें तो, ऑरिगन के दिनों में भी कलीसिया की शिक्षा पवित्र-वचन में पाए जाने वाले मसीह के वचनों का सटीक सारांश थी। और इसी कारणवश उसके समय की कलीसिया धर्मशिक्षाओं की परख के लिए उसे "स्तर" या "विश्वास के नियम" के रूप में कर पाई थी। परन्तु निर्णायक अधिकार नए नियम में ही पाया जाता था, समकालीन कलीसिया में नहीं।

हम इसे कई कड़ियों से बनी जंजीर के उदाहरण से समझ सकते हैं। प्रारंभिक कलीसिया मसीह की शिक्षा, जो पवित्र-वचन में उपस्थित थी, को मजबूती से पकड़े रखना चाहती थी। यह मसीह को पहली कड़ी बनाता है। प्रेरित मसीह के साथ सीधे सम्पर्क में थे, और सीधे उसी के द्वारा सिखाए भी गए थे। अत: उनकी शिक्षाएं जंजीर में दूसरी कड़ी बन जाती हैं। फिर प्रेरितों ने मसीह के विषय में अपने ज्ञान को पवित्र-वचन में संजो दिया, जिससे पवित्र-वचन इस जंजीर में तीसरी कड़ी बन गया। ये तीनों कड़ियां सिद्ध और त्रुटिरहित थीं क्योंकि इनकी प्रेरणा पवित्र आत्मा से मिली थी।

परन्तु चौथी कड़ी, कलीसिया की पारंपरिक शिक्षाएं, भिन्न थी। इन रीतियों का संचारण त्रुटिरहित नहीं था; पवित्र आत्मा ने जिम्मेवारी नहीं दी थी कि वे कभी गलत नहीं होंगी। वास्तव में, जैसे कि हम देख चुके हैं, कुछ कलीसियाओं की रीतियां अन्य कलीसियाओं की रीतियों से विपरीत थीं।

इनमें से कुछ शिक्षाएं जो व्यवहार के छोटे-मोटे विषयों, जिनके बारे में पवित्र-वचन प्रत्यक्ष रूप से बात नहीं करता है, के बारे में थीं। परन्तु अन्य शिक्षाएं पवित्र-वचन के मूल अर्थ को सारांशित करती थीं, खासकर विश्वास के मुख्य सूत्रों के विषय में, जैसे कि वे जो प्रेरितों के विश्वास-कथन में सूचीबद्ध हैं।

जब इन मुख्य धारणाओं की बात करते हैं, प्रारंभ से ही अनेक स्थानों पर अनेक कलीसियाई अगुवों ने परंपराओं की अभिपुष्टि की। और इससे बढ़कर, उन्हें सीधे वचन से भी प्रमाणित किया जा सकता था। इसीलिए, ऑरिगन कलीसिया की पारंपरिक शिक्षाओं को विश्वास के नियम के रूप में लागू करने के प्रति आश्वस्त था।

परन्तु फिर भी, यह कड़ी त्रुटिरहित नहीं थी। कलीसियाओं, इसकी परिषदों और मसीही लोगों के लिए गलतियां करना संभव था। तीसरी सदी में रोम के बिशप स्टीफन की धर्मशिक्षाओं के विरुद्ध कारथेज के बिशप साइप्रियन द्वारा अपने पत्र 73 में कहे गए शब्दों को सुनें:

> रीतियां, जिन्हें कुछ लोग महत्वपूर्ण मानते हैं, सत्य को बनाए रखने और विजयी होने में रुकावट न डालें; क्योंकि सत्य के बिना रीति गलती की धरोहर है।

साइप्रियन का मत था कि कुछ प्राचीन मसीही दृष्टिकोण और क्रियाएं उस सत्य पर आधारित नहीं है जो हमें प्रेरितों से प्राप्त हुआ है। इसकी अपेक्षा वे "गलती की धरोहर थी"- वे गलतियां जो कलीसिया में काफी समय से प्रवेश कर गई थीं। वास्तव में, यह मानवीय त्रुटिपूर्णता की समस्या थी जिसके कारण कलीसिया ने अपने विश्वास के नियम को लिखित रूप में रखने को महत्वपूर्ण समझा। ऑरिगन और अन्य प्रारंभिक कलीसिया अगुवों ने कलीसिया के विश्वास के नियम को लेखनबद्ध किया, इस बात को निश्चित करने के लिए कि पूरे संसार के मसीही अपनी धर्मशिक्षाओं की पारंपरिक शिक्षाओ से तुलना कर सकें। कलीसियाई परिषदों ने पारंपरिक शिक्षाओं को लेखनबद्ध किया ताकि उनके निर्णयों से अलग-अलग स्थानों और समयों के मसीही अवगत हो सकें।

सभी विषयों में कलीसिया की पारंपरिक शिक्षाओं को बचाए रखने का लक्ष्य इस बात को आश्वस्त करना था कि कलीसियाएं वचन के मूल अर्थ से भटक न जाएं, ताकि विश्वासी प्रेरितों की शिक्षाओं को समझ सकें, ताकि वे मसीह के शब्दों को गहराई से समझ सकें और उनके अनुसार जी सकें।

> बाइबल बहुत बड़ी पुस्तक है, और इसलिए वह अपने आप आपसे बात नहीं कर सकती, इसलिए आपको इसका एक अच्छा सारांश प्रदान करना होगा। नए नियम में ही मसीह कौन है, इस धर्मशिक्षा की कई चुनौतियां है। और आप कुछ प्रेरितों को वादविवाद करता और कहते देख सकते हैं कि “नहीं, सत्य तो यह है”। और यह विषय दूसरी सदी तक भी जारी रहता है। यीशु के व्यक्तित्व और बाइबल की प्रकृति की धर्मशिक्षाओं के विषय बड़ी चुनौतियां हैं। और इसलिए उन्हें बाइबल के विश्वास का जितना सारांश में वे निकाल सकें उतना निचोड़ निकालना पड़ा। और इसी से प्रेरितों के विश्वास-कथन का उदय होता है। यह बात याद रखना जरुरी है कि वे बाइबल में कुछ और शामिल करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, वे इसे स्पष्ट करने और इसके अर्थ को प्रकट करने का प्रयास कर रहे हैं।
>
> डॉ. पीटर वाल्कर

जैसा कि बासिल ने 374 ईस्वी में अपनी पुस्तक ऑन द होली स्पीरिट में लिखा हैं:

> जो हमारे पूर्वजों ने कहा, वही हम कहते हैं... परन्तु हम केवल इस बात पर ही आधारित नहीं हैं कि यह पूर्वजों की परंपरा है; क्योंकि उन्होंने भी पवित्र-वचन के भाव का अनुसरण किया था।

अब हमें यह उल्लेख करना चाहिए कि अपनी पारंपरिक शिक्षाओं का बचाव करने के लिए, प्रारंभिक कलीसिया धर्मशिक्षा के छोटे-मोटे बिंदुओं के बारे में ज्यादा चिंतित नहीं थी। वे मुख्य, आधारभूत विश्वासों और क्रियाओं के प्रति केन्द्रित थे। यह बात उनके लेखनों में निहित तर्क-वितर्कों के प्रकार से और विश्वास के लिखित नियमों में पाई जाने वाली बातों से स्पष्ट होती है।

उदाहरण के तौर पर, उन्होंने मानवाभासवादियों (डोसेटिस्ट्स), जिन्होंने मसीह के मानव होने का इनकार किया, का अपने लेखनों के द्वारा खण्डन किया। उन्होंने ज्ञानवादियों (नोस्टिक्स), जो मानते थे कि पुराने नियम का परमेश्वर बुरा है, और जिन्होंने सब प्रकार के शारीरिक पापों की अनुमति दी, का खण्डन किया। और उन्होंने अपने लेखनों के द्वारा अनेक अन्य झूठी शिक्षाओं का खण्डन किया जो वचन की मूल शिक्षाओं को चुनौती देती थीं।

पवित्र-वचन और कलीसिया की पारंपरिक शिक्षाओं के बारे में बात करने के बाद, हम अब यह चर्चा करने के लिए तैयार हैं कि किस प्रकार प्रेरितों के विश्वास-कथन ने एक-एक विश्वासी के लिए कलीसिया की पारंपरिक शिक्षाओं का सार निकाला।

प्रेरितों का विश्वास-कथन

जैसे कि हम देख चुके हैं, प्रेरितों के विश्वास-कथन का प्रमुख इस्तेमाल इस बात की पुष्टि करने के लिए किया जाता था कि मसीही बाइबल की मूल शिक्षाओं का पालन करें। उसी प्रकार से आधुनिक कलीसियाएं कक्षाओं और बाइबल अध्ययनों के द्वारा नए विश्वासियों को चेला बनाती हैं, प्रारंभिक कलीसिया नए विश्वासियों को विश्वास की मूल बातें सिखाने के लिए विश्वास-कथनों का इस्तेमाल करती थीं।

अगस्तीन, हिप्पो का प्रसिद्ध बिशप (354-430 ईस्वी), ने बपतिस्मा के लिए तैयार नए विश्वासियों को दिए जाने वाले संदेश में विश्वास-कथनों की महत्ता को दर्शाया था। इस संदेश में, जो विश्वास-कथन उनके मन में था, वह था नाइसीन विश्वास-कथन, परन्तु उसके वचन कलीसिया की प्रारंभिक सदियों के सभी प्रकार के विश्वास-कथनों के उद्देश्य और प्रकार का सटीक सारांश प्रस्तुत करते हैं। विश्वास-कथन पर नए विश्वासियों को दिए संदेश में अगस्तीन ने यह कहा:

> ये शब्द जो आपने सुने हैं वे परमेश्वर के वचन में अलग-अनग जगहों में पाए जाते हैं: यहां उन्हें एकत्रित करके एक स्थान पर रखा गया है, ताकि वह जो कम बुद्धि वाला है उसकी याददाश्त पर ज्यादा जोर न पड़े; और ताकि हर व्यक्ति जो वह विश्वास करता है, उसे कह और मान सके।

जैसे कि अगस्तीन ने यहां ईशारा किया है, मसीहियत की मुख्य शिक्षाएं पवित्र-वचन में यहां वहां बिखरी हुई हैं। इसलिए प्राचीन कलीसियाओं ने पवित्र-वचन की मुख्य शिक्षाओं को विश्वास-कथनों में संक्षिप्त कर दिया। इस ने आश्वस्त किया कि प्रत्येक विश्वासी- जैसे कि वह लिखता है “कम बुद्धि वाला” या अशिक्षित व्यक्ति भी- पवित्र-वचन की मूल शिक्षाओं की पुष्टि कर सके और उनका पालन कर सके।

निसंदेह, यद्यपि अनेक मण्डलियों के पास अलग-अलग विश्वास-कथन थे, ऐसा भी एक भाव था जिनमें उनके पास भी विश्वास के कम से कम स्तर थे। कई कलीसियाएं नए विश्वासियों से ज्यादा समझ की मांग नहीं करती थीं, वहीं कुछ कलीसियाएं उन विश्वासियों को नहीं अपनाती थीं जिनके पास सच्चा विश्वास तो था परन्तु गहन धर्मविज्ञानीय ज्ञान नहीं था। परिणामस्वरूप, एक व्यक्ति किसी एक कलीसिया में तो विश्वासी बनने के योग्य था परन्तु दूसरी में नहीं। और इस असमानता के प्रकाश में प्रारंभिक कलीसिया ने एक विश्वास-कथन की आवश्यकता को महसूस किया जो उन सब मण्डलियों के द्वारा स्वीकार्य हो जो अपने आप को मसीही कहलाती हैं।

इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रेरितों का विश्वास-कथन महत्वपूर्ण बन गया। यह विश्वास-धारणाओं का सबसे सीधा कथन था जिसे सभी मसीहियों द्वारा पूरी तरह से समझा गया था और आगे भी समझा जाना चाहिए।

> प्रेरितों का विश्वास-कथन वास्तव में मसीही विश्वास का सार है। और यह इस तथ्य को दर्शाता है कि यद्यपि हम विश्वास करते हैं कि बाइबल का प्रत्येक शब्द सटीक और त्रुटिरहित है, फिर भी हमें लोगों को सुसमाचार का निचोड़ समझाने के लिए एक सारांश की आवश्यकता होती है। प्रेरितों का विश्वास-कथन उसी प्रकार का एक सारांश है। मसीही परंपरा में काफी प्रारंभ से शुरु हआ यह विश्वास-कथन उन सभी बातों को समा लेता है जो प्रेरितों ने विश्वास के निचोड़ के विषय में मसीह द्वारा प्राप्त प्रकाशन के आधार पर सिखाया था। “मैं विश्वास करता हूँ”। सब यहीं से प्रवाहित होता है। और इसलिए यहां पर जो सबसे महत्वपूर्ण है वह यह है कि प्रेरितों का विश्वास-कथन वह सब कहने में हमारी सहायता करता है जो हमें सुसमाचार को व्यक्त करने हेतु कहने के लिए पर्याप्त हो।
>
> डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलर, जूनियर

अब जब हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन के इतिहास के बारे में चर्चा कर ली है, तो हम इसकी पुष्टियों की रूपरेखा प्रदान करने के लिए तैयार हैं। कलीसिया की प्रारंभिक सदियों की भांति आज भी वह विशाल चित्र उतना ही उपयोगी है कि मसीही क्या विश्वास करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रूपरेखा

वर्षों से धर्मविज्ञानियों ने प्रेरितों के विश्वास-कथन के विषय का अनेक प्रकार से वर्णन किया है। इस अध्याय में हम विश्वास-कथन के विश्वास के सूत्रों को तीन दृष्टिकोणों से देखेंगे। सर्वप्रथम हम स्वयं परमेश्वर की धर्मशिक्षा को संबोधित करेंगे। दूसरा, हम कलीसिया के बारे में बात करेंगे। और तीसरा, हम उद्धार के विषय को संबोधित करेंगे। प्रेरितों के विश्वास-कथन में परमेश्वर की धर्मशिक्षा के साथ आइए हम प्रारंभ करें।

परमेश्वर

> मसीही धर्मविज्ञान, हमारे मसीही विश्वास, हमारे मसीही व्यवहार के विषय में हम जो कुछ भी कहते हैं, उन सब के लिए परमेश्वर की धर्मशिक्षा एक आधारभूत शिक्षा है। हम स्व्यं को, संसार को और हमारे अर्थ एवं उद्देश्य को किस प्रकार समझते हैं, उसका सीधा संबंध उससे है कि परमेश्वर कौन है। प्रत्येक मसीही धर्मशिक्षा, चाहे वह उद्धार हो, कलीसिया हो, भविष्य में घटित होने वाली अंतिम घटनाएं हों, वह जीवित परमेश्वर, त्रिएक परमेश्वर पर आधारित और निर्भर होती है। इस जीवन की हमारी सारी आशा और आत्मविश्वास, उद्धार और पापों की क्षमा के विषय में हम जो भी सोचते हैं; वह सब परमेश्वर पर ही आधारित है जिसने इसकी योजना पहले से ही बनाई है, परमेश्वर जिसने अपनी इच्छा और उद्देश्य को प्रकट किया है और परमेश्वर जो अपनी इस योजना को पूर्ण करने के लिए इन सब का अंत भी करेगा। अत: यह सब उस पर ही निर्भर करता है जो परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में सोचते हैं।
>
> डॉ. स्टीफन वेल्लम

प्रेरितों के विश्वास-कथन में परमेश्वर की धर्मशिक्षा के दो मुख्य पहलू प्रकट होते हैं। पहला, विश्वास-कथन इस धारणा पर रचित है कि परमेश्वर का अस्तित्व त्रिएक है। और दूसरा, इसमें परमेश्वर के भिन्न व्यक्तित्वों के विषय में कथन पाए जाते हैं, जैसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। आइए पहले हम त्रिएकता पर चर्चा करें।

त्रिएकता

आप पाएंगे कि प्रेरितों के विश्वास-कथन को तीन भागों में बांटा गया है, और प्रत्येक भाग "मैं . . . विश्वास करता हूँ" से शुरू होता है। पहला खण्ड परमेश्वर पिता में विश्वास करने के विषय में कहता है। दूसरा खण्ड प्रभु यीशु मसीह, उसके इकलौते पुत्र, हमारे प्रभु के विषय में है। और तीसरा खण्ड पवित्र आत्मा में विश्वास को दर्शाता है, उसकी सक्रिय सेवकाइओं की सूची प्रदान करता है।

अब हमें यह स्पष्ट कर लेना चाहिए कि विश्वास-कथन के कई प्राचीन विवरण यीशु मसीह के धर्मसूत्रों से पूर्व "मैं . . . विश्वास करता हूँ" शब्दों को शामिल नहीं करते। उनके स्थान पर कई केवल "और" शब्द का इस्तेमाल करते हैं जो इस संदर्भ में उसी अर्थ को धारण करता है जो "मैं . . . विश्वास करता हूँ" का है। परन्तु सभी विषयों में परमेश्वर के व्यक्तित्वों के अनुसार विश्वास-कथन का विभाजन कलीसिया के द्वारा सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित किया गया है। यह विधि त्रिएक्य है। अर्थात्, यह इस

धारणा पर आधारित है कि मात्र एक ही परमेश्वर है, और इस परमेश्वर का अस्तित्व तीन व्यक्तित्वों में पाया जाता है, वे व्यक्तित्व हैं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

यह वही पद्धति है जो हम मत्ती 28:19 में पाते हैं जहां यीशु अपने चेलों को यह आज्ञा देते हैं:

> "इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दो" (मत्ती 28:19)।

यहां, प्रेरितों के विश्वास-कथन की भांति, इन तीन नामों का एक साथ और समान रूप में उल्लेख दर्शाता है कि जहां पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा भिन्न व्यक्तित्व हैं, वहीं वे एक ही परमेश्वर हैं।

यह सत्य है कि प्रेरितों का विश्वास-कथन विशेष रूप से "त्रिएकता" शब्द का उल्लेख नहीं करता, और न हीं इसके विवरणों को दर्शाता है। परन्तु याद रखें कि विश्वास-कथन का उद्देश्य विश्वास-धारणाओं का सारांश प्रदान करना था, न कि विश्वास के कथन का पूर्ण विवरण प्रदान करना। और जब कलीसिया की आराधना-पद्धति में इसका उपयोग किया गया, कलीसिया में हर कोई जानता था कि परमेश्वर के तीन व्यक्तित्वों के विषय में इस प्रकार के उल्लेख का अर्थ त्रिएकता के तथ्य को लागू करना ही था।

हर एक मसीही त्रिएकता के पूर्ण अर्थ को समझ नहीं पाता है, इसलिए हमें यहां पर इसे स्पष्ट करना चाहिए। त्रिएकता को सामान्यत: इस प्रकार से स्पष्ट किया जाता है:

परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं पर एक ही तत्व है।

व्यक्तित्व शब्द से हमारा अर्थ है भिन्न, आजाद व्यक्तित्व। और तत्व शब्द से हम परमेश्वर की मूलभूत प्रकृति या स्वभाव जो उसका है, को दर्शा रहे हैं।

निसंदेह, त्रिएकता का तथ्य मनुष्य जाति के लिए समझना बहुत ही कठिन है। परमेश्वर का अस्तित्व और उसकी प्रकृति मनुष्यों के अनुभव क्षेत्र से इतनी दूर है कि उसे समझ पाना अत्यंत कठिन है। परन्तु फिर भी त्रिएकता मसीहियत की अत्यंत महत्वपूर्ण विश्वास-धारणाओं में से एक है। लेकिन किस प्रकार ऐसी जटिल धर्मशिक्षा मसीही धर्मविज्ञान में इतनी महत्वपूर्ण बन गई?

> त्रिएकता वह है जिसका अहसास आप तब करते हैं जब आप बाइबल को एक सपूर्ण अर्थ में पढ़ते हैं। आपको तब अहसास होता है कि भिन्न व्यक्तित्वों में पिता स्पष्ट रूप से परमेंश्वर है और पुत्र स्पष्ट रूप से परमेश्वर है और आत्मा स्पष्ट रूप से परमेश्वर है। और इसलिए पवित्र-वचन की शिक्षा को त्रिएकता जैसी धर्मशिक्षा के साथ संयोजित करने की आवश्यकता है।

डॉ. ऐरिक के. थोनेस

> अत: त्रिएकता की शिक्षा मसीही धर्मविज्ञान की बुनियाद बन जाती है, मैं इसे मुख्य रूप से इसलिए मानता हूँ क्योंकि यह बाइबल पर आधारित है। अब हमें सावधान रहने की जरूरत है कि हम इसे कैसे समझते हैं क्योंकि शब्द त्रि-ए-क-ता पवित्र-वचन में पाया नहीं जाता, पन्तु उसका भाव अवश्य पाया जाता है। इसलिए बाइबल की शिक्षा का सार यह है, जो वचन हमें परमेश्वर के विषय में बताता है कि वह एक ही है, कि पिता परमेश्वर है, कि पुत्र परमेश्वर है और कि आत्मा परमेश्वर है- जब उन्हें संपूर्ण बाबइल के भाव में रखा जाता है और तब यह निष्कर्ष निकलता है कि परमेश्वर व्यक्तित्वों की त्रिएकता है।

डॉ. रॉबर्ट जी. लिस्टर

इसलिए जब हम कहते हैं कि परमेश्वर का एक ही तत्व है, तो हम बाइबल के सत्य का पक्ष ले रहे हैं कि मात्र एक ही परमेश्वर है। और हम यह स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं कि किस प्रकार तीन भिन्न व्यक्तित्व एक परमेश्वर हो सकते हैं। हम तत्व शब्द का प्रयोग यह दर्शाने के लिए कर रहे हैं कि तीनों में से प्रत्येक व्यक्तित्व अपनी संपूर्णता में एक समान हैं, और उन्हीं बातों और अस्तित्व को रखते हैं जो पिता में, पुत्र में और पवित्र आत्मा में पाया जाता है।

और जब हम कहते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व तीन व्यक्तित्वों में पाया जाता है, तो हम बाइबल के उस सत्य का पक्ष ले रहे हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक दूसरे से भिन्न हैं। वे भिन्न व्यक्तित्व हैं जो एक दूसरे से सम्पर्क करते हैं, एक दूसरे से पारस्परिक व्यवहार करते हैं और एक दूसरे के साथ संबंध रखते हैं।

अनेक रूपों में, त्रिएकता का भाव एक बहुत बड़ा रहस्य है। परन्तु यह हमारे असाधारण परमेश्वर की प्रकृति के विषय में बाइबल की अनेक शिक्षाओं का सटीक सारांश भी है।

अनेक कारणों से त्रिएकता का विचार मसीही धर्मविज्ञान के लिए आलोचनापूर्ण भी है। उदाहरण के तौर पर, यह हमारे इस विश्वास का पक्ष लेता है कि यीशु परमेश्वर है, और कि यीशु केवल पिता का रूपमात्र ही नहीं है। यह इस बात को भी स्पष्ट करता है कि हम क्यों ऐकेश्वरवाद की पुष्टि करते हैं, एक ही परमेश्वर की आराधना करते हैं, यद्यपि हम तीन व्यक्तित्वों, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, की आराधना करते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं। इससे बढ़कर, यह हमें परमेश्वर के सभी व्यक्तित्वों को उचित सम्मान देने में सहायता करता है। और यह हमें इस ज्ञान से राहत प्रदान करता है कि परमेश्वर के किसी भी व्यक्तित्व की उपस्थिति और सहायता परमेश्वर की उपस्थिति और सहायता है। वास्तव में, त्रिएकता में विश्वास अन्य अनेक मसीही धारणाओं के लिए इतना मूलभूत है कि इसके बिना ऐतिहासिक मसीहियत की कल्पना करना असंभव है।

त्रिएकता के संबंध में प्रेरितों के विश्वास-कथन में परमेश्वर की धर्मशिक्षा पर चर्चा करने के पश्चात् हम एक दूसरे से अलग परमेश्वर के भिन्न व्यक्तित्वों के बारे में इसके कथनों के बारे विचार-विमर्श करने हेतु तैयार हैं।

व्यक्तित्व

पिता के विषय में विश्वास-कथन उसके सर्वशक्तिमान चरित्र को दर्शाता है, और इस ऐतिहासिक तथ्य का उल्लेख करता है कि वह स्वर्ग और पृथ्वी का रचियता है। अब, निश्चिततः परमेश्वर में अनश्वर सामर्थ रखने और सर्वश्रेष्ठ होने के अतिरिक्त अनेक चरित्र हैं, और उसने संसार की रचना करने से भी अधिक विस्मयकारी कार्य भी किए हैं। कुछ भावों में पिता के विषय में विश्वास-कथन का विवरण मसीहियमत को दूसरे धर्मों से भिन्न नहीं करता है जो सर्वश्रेष्ठ और दैवीय रचनाकार में विश्वास को व्यक्त करते हैं। परन्तु प्रारंभिक कलीसिया ने महसूस किया कि ये कथन यह दर्शाने के लिए पर्याप्त थे कि पिता के विषय में एक व्यक्ति के विश्वास मसीहियत के साथ सामंजस्यपूर्ण थे। और मसीहियत को अन्य धर्मों से पृथक करने के लिए वे विश्वास-कथन के दूसरे कथनों पर निर्भर हुए।

उदाहरण के तौर पर, विश्वास-कथन में पुत्र यीशु मसीह के विषय में कहने को बहुत कुछ है। यद्यपि यह उसके किसी भी चरित्र को नहीं दर्शाता है, परन्तु इस संसार में उसके जीवन के कई विवरणों का उल्लेख करता है, ऐसे विवरण जिसका कलीसिया से बाहर के लोग इनकार करेंगे।

विश्वास-कथन यीशु के देहधारण, मानवीय रूप में इस धरती पर आने और एक सच्चा मानवीय जीवन व्यतीत करने का उल्लेख करता है। और यह उसके दुःखों, मृत्यु, गाढ़े जाने और स्वर्गारोहण के विषय में भी बात करता है। पवित्र-वचन हमें बताता है कि अविश्वासियों ने प्रारंभ से ही इन मूल तथ्यों का इनकार किया है।

आज भी अनेक उदारवादी इतिहासकार और धर्मविज्ञानी अनेक मसीही समूहों और झूठे धर्मों के समान इन तथ्यों का इनकार करते हैं। उदाहरणत:, इस्लाम पुष्टि करता है कि यीशु परमेश्वर का सच्चा नबी था। परन्तु वह जोर देता है कि उसको न तो कभी क्रूस पर चढ़ाया गया था और न ही कभी उसका पुनरुत्थान हुआ था, और वह उसकी दैव्यता का भी इनकार करता है।

अंत में, विश्वास-कथन यह उल्लेख करता है कि यीशु अंतिम दिन में सारी मानवजाति का न्याय करेगा, दुष्टों को दण्ड देगा परन्तु विश्वासियों को अनन्त, धन्य जीवन प्रदान करेगा।

पवित्र आत्मा के विषय में, विश्वास-कथन कहता कि उसी से कुंवारी मरियम ने यीशु को जन्म दिया। इसके अतिरिक्त, यह परमेश्वर के भिन्न व्यक्तित्व के रूप में उसके अस्तित्व की पुष्टि करता है। वास्तव में विश्वास-कथन पवित्र-आत्मा को कलीसिया और वर्तमान एवं भविष्य के हमारे उद्धार के अनुभव के साथ जोड़ता है।

आगे के अध्यायों में हम परमेश्वर के व्यक्तित्वों के बारे में और अधिक चर्चा करेंगे। अब हम केवल यह दर्शाएंगे कि विश्वास-कथन केवल त्रिएकतावाद की पुष्टि करने से ही संबंधित नहीं है, बल्कि त्रिएकता के प्रत्येक व्यक्तित्व के बारे में उन बातों को भी बताता है जो मसीही विश्वास के लिए अतिमहत्वपूर्ण हैं। जहां इसके कथन काफी प्रगाढ़ नहीं है, वहीं विश्वास-कथन ऐतिहासिक मसीही विश्वास की पुष्टि करने वालों और न करने वालों के बीच भिन्नता दर्शाने के लिए परमेश्वर और उसके व्यक्तित्वों के विषय में पर्याप्त रूप से बात करता है।

हमने उन धर्मशिक्षा-संबंधी कथनों का उल्लेख कर लिया है जो परमेश्वर के बारे में बात करती हैं, अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि प्रेरितों का विश्वास-कथन किस प्रकार कलीसिया के विषय में बात करता है।

कलीसिया

प्रेरितों का विश्वास-कथन कलीसिया का वर्णन दो भिन्न शब्द-समूहों में करता है। पहला कलीसिया को पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया कहा जाता है। दूसरा, कलीसिया का वर्णन संतों की संगति के रूप में किया जाता है। इन शब्द-समूहों की व्याख्या अनेक प्रकारों से की गई है, और हम आगे आने वाले अध्यायों में उनके बारे में गहनता से चर्चा करेंगें।

अब हम केवल यह देखेंगे कि पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया शब्द-समूह रोमी कैथोलिक कलीसिया को नहीं परन्तु संपूर्ण जगत की कलीसिया के सारे भागों को दर्शाता है।

फिर भी अनेक प्रोटेस्टेंट विश्वासियों को किसी भी प्रकार की कलीसिया के बारे में सोचना शययद अजीब प्रतीत होगा। अत:, यह इस बात में सहायता कर सकता है कि जब विश्वास-कथन कहता है, “मैं . . . कलीसिया . . . में विश्वास करता हूँ,” इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपना भरोसा कलीसिया पर रखते हैं। बल्कि इसका अर्थ है कि हम इस विश्वास की पुष्टि करते हैं कि कलीसिया पवित्र और सार्वभौमिक है।

और हम हमारे इस विश्वास की पुष्टि करते हैं कि वहां संतों की संगति, अर्थात् विश्वासियों की सहभागिता होती है। इन भावों में ऐतिहासिक मसीहियत ने कलीसिया की महत्ता पर बल दिया है।

इस अध्याय में हम कलीसिया के केवल दो पहलुओं पर ध्यान देंगे जो प्रेरितों के विश्वास-कथन के विश्वास के सूत्रों के लिए मुख्य थे। एक ओर हम कलीसिया में सहभागिता को देखेंगे। तथा दूसरी ओर हम कलीसिया द्वारा धर्मशिक्षाओं को बनाए रखने पर चर्चा करेंगे। आइए हम कलीसिया में सहभागिता के साथ प्रारंभ करें।

सहभागिता

जब विश्वास-कथन कहता है, "मैं . . . पवित्र कलीसिया . . . में विश्वास करता हूँ," तो वह कलीसिया में सहभागी होने की महत्ता पर बल देता है। निसंदेह, मसीही कलीसिया के इतिहास में, ऐसे बहुत से लोग रहे हैं जो परमेश्वर को पिता, यीशु को प्रभु और पवित्र आत्मा को सहायक के रूप में तो पाना चाहते हैं परन्तु जो दृष्टिगोचर कलीसिया, परमेश्वर के एकत्रित लोगों, के भाग नहीं बनना चाहते। जैसा कि हम इब्रानियों 10:25 में पढ़ते हैं:

> और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है। (इब्रा 10:25)

पहली सदी में भी, कुछ नामधारी मसीही आराधना, शिक्षण और संगति के स्थान के रूप में एकत्रित कलीसिया के पक्ष में नहीं थे। परन्तु वचन हमें सिखाता है कि मसरीहियों के लिए कलीसिया महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है।

निसंदेह, जिन्होंने मूल रूप से प्रेरितों के विश्वास-कथन का प्रयोग किया था वे ऐसे नहीं थे। इसके विपरीत, विश्वास-कथन का प्रयोग विशेषकर कलीसिया सभाओं में ही किया जाता था। उनके द्वारा इसकी पुष्टि की जाती थी जो बपतिस्मा पाने हेतु कलीसिया आते थे। और फिर वे कलीसिया की सभाओं में शामिल किए जाते थे। यह वह नमूना है जो विश्वास-कथन हमें पालन करने को कहता है।

वर्तमान में भी हम ऐसे मसीहियों को पाते हैं जो कलीसिया के पक्ष में नहीं हैं। शायद इसलिए कि वे संगठित धर्म को पसंद नहीं करते। या फिर दूसरे मसीहियों ने उनसे दुर्व्यवहार किया होगा। या फिर शायद वे सोचते होंगे कि मसीही पुस्तकों को पढ़ना, मसीही कार्यक्रम देख लेना और मसीही वेबसाइट्स इस्तेमाल करना पर्याप्त है।

परन्तु बाइबल मसीहियों को एक वास्तविक, भौतिक समुदाय का निर्माण करने की शिक्षा देती है, और यह बल देती है कि यह समुदाय प्रत्येक विश्वासी के लिए अतिमहत्त्वपूर्ण है। इसे मात्र आत्मिक संगति तक ही सीमित कर देना ठीक नहीं है, यद्यपि यह सत्य है कि मसीह और उसके आत्मा के माध्यम से मसीही आत्मिक संगति करते हैं। इसकी अपेक्षा हमारा समुदाय परिवार या आस-पड़ोस की भंति होना चाहिए। इसमें ऐसे लोग होने चाहिए जो आमने-सामने एक दूसरे से व्यवहार करें।

कलीसिया में सहभागिता की महत्ता के साथ, हम कलीसिया में और कलीसिया के द्वारा धर्मशिक्षा को बनाए रखने की ओर बढ़ेगें।

धर्मशिक्षा को बनाए रखना

> प्रारंभिक दिनों से ही, कलीसिया में विश्वास-कथन के नियमित जापन, अंगीकरण और कंठस्थ करने की क्रिया ने एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, विशेषकर पहली और आगे आने वाली सदियों की प्रारंभिक मसीहियत में जहां साक्षरता की दर बहुत ही कम थी। और इसलिए बहुत ही कम लोग पढ़ पाते थे, और जो पढ़ पाते थे उनमें से बहुत ही कम लोगों के पास बाइबल थी। इसलिए आराधना सभा में इन विश्वास-कथनों के सार्वजनिक अंगीकरण ने उस संरचना या जिसे हम विश्वास का नियम कह सकते हैं, अथवा वचन की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए कि एक उचित समझ के लिए नियमित पाठन प्रदान किया।
>
> डॉ. जोनाथान पेनिंगटन

विश्वास के नियमों के विषय में चर्चा करते समय जैसा हमने उल्लेख किया था, कलीसिया त्रुटिरहित नहीं है, और प्रेरितों का विश्वास-कथन हमें उत्साहित नहीं करता कि हम स्थनीय कलीसिया की हर शिक्षा पर विश्वास करें। बल्कि यह मात्र इस बात की पुष्टि करता है कि मसीह ने सुसमाचार और उसके सत्यों को बनाए रखने और उनकी घोषणा करने हेतु कलीसिया को नियुक्त किया।

देखें किस प्रकार यीशु के भाई यहुदा ने अपनी पत्री के 3 और 4 पदों में कलीसिया के मिशन के बारे में लिखा है:

> हे प्रियो, जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यंत परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था जिसमें हम सब सहभागी हैं, तो मैं ने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था। क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं, जिनके इस दण्ड का वर्णन पुराने समय में पहले ही से लिखा गया था: वे भक्तिहीन हैं; और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं, और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इनकार करते हैं। (यहूदा 3-4)

यहूदा के अनुसार, कलीसिया का आंशिक कार्य सत्यों और विश्वास-धारणाओं का बचाव करने हेतु विश्वास के लिए यत्न करना भी है, जो इसे उन लोगों के विरुद्ध प्रदान की गई हैं जो झूठी शिक्षाओं और क्रियाओं को बढ़ावा देते हैं।

अब हम सबके समक्ष यह स्पष्ट हो गया होगा कि कलीसिया के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक झूठी शिक्षाएं पाई जाती हैं। और अनेक पापमय क्रियाएं भी पाई जाती हैं। फिर भी, परमेश्वर ने कलीसिया के कार्य को कभी रोका नहीं है, या न ही किसी और समूह या व्यक्ति को धर्मशिक्षा का बचाव करने का कार्य ले लेने को कहा है। सत्य का बचाव करने का कार्य आज भी कलीसिया का ही है।

और कलीसिया आज भी अपना कार्य करने का प्रयास कर रही है। कभी-कभी हम दूसरों से बेहतर करते हैं। हमारा कुछ धर्मविज्ञान वचन के अनुसार है, परन्तु इसके कुछ भाग में सुधार किया जाना शेष है, या फिर इसे पूरी तरह से बदला जाना। और यह कार्य सदैव बना रहेगा। परन्तु इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जो बात हम कहना चाहते हैं वह यह है: हम हार नहीं मान सकते। हमें कलीसिया में धर्मशिक्षा को बनाए रखने हेतु प्रयास करते रहना है। और यदि हम इस बुलाहट को त्याग देते हैं, तो हम ऐतिहासिक मसीही विश्वास के इस मुख्य सूत्र का इनकार कर रहे हैं: “मैं कलीसिया में विश्वास करता हूँ।”

अब जब हमने परमेश्वर और कलीसिया से संबंधित विश्वास के सूत्रों पर चर्चा कर ली है, तो हम हमारे तीसरे खण्ड की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं: प्रेरितों के विश्वास-कथन में निहित उद्धार के विषय में कथन।

उद्धार

> प्रेरितों के विश्वास-कथन के अंत में उद्धार के विषय में काफी कुछ है। कुछ लोग अचरज करते हैं कि यह अंत में क्यों है, इसकी अपेक्षा कि किसी ओर जगह पर। और निसंदेह स्वयं विश्वास-कथन हमें इसके विषय में नहीं बताता। परन्तु, यदि आप इसे देखते हैं, जिस प्रकार मुझे यह दिखाई पड़ता है, वह यह कि विश्वास-कथन परमेश्वरत्व- पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, को स्थापित करना चाहता है। यह निश्चित करने के लिए कि उद्धार का अनुभव उस परमेश्वरत्व से प्रवाहित होता है, न कि मानवीय रीति या प्रणाली से। यह जान लेना कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा कौन है, उस निमंत्रण और वायदे की ओर अगुवाई

> करता है कि यदि हम हमारे पापों का अंगीकार कर लें तो हम उद्धार पा सकते हैं। और इसलिए मैं सोचता हूँ कि वे कथन अंत में इसलिए हैं कि परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते का फल उस जड़ से आता है जो परमेश्वर त्रिएकता में है।
>
> डॉ. स्टीव हार्पर

विश्वास-कथन के अंतिम तीन सूत्र उद्धार के पहलुओं के विषय में हैं। विशेषकर, वे पापों की क्षमा, देह के पुनरुत्थान और अनन्त जीवन का उल्लेख करते हैं। पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में पुनरुत्थान और अनन्त जीवन की चर्चा युगांतविद्या, अंतिम समय के विषय में धर्मशिक्षा, के शीर्षक तले की जाती है। परन्तु इसे सरल बनाने के लिए हम उनकी चर्चा उद्धार के शीर्षक तले करेंगें।

सभी मसीही यीशु मसीह के बलिदान के माध्यम से पापों की क्षमा में विश्वास करते हैं। हम विश्वास करते हैं कि यदि हम अपने पापों को मानकर उनसे पश्चाताप कर लें, तो परमेश्वर हमें उनके दण्ड के लिए नरक में नहीं डालेगा। और जिस प्रकार प्रेरितों का विश्वास-कथन इंगित करता है, प्रारंभिक दिनों से ही यह कलीसिया का विश्वास रहा है। और हम सब उस वचन को जानते हैं जो हमें सिखाता है कि जिनको क्षमा प्राप्त हुई है उनको यीशु मसीह में अनन्त जीवन मिलता है। उदाहरणत:, यूहन्ना 3:16 हमें इन शब्दों के द्वारा उत्साहित करता है:

> परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए. . . जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती। (यूहन्ना 3: 16-18)

प्रत्येक विश्वासी अनन्त जीवन पाता है। कई बार, यह तब प्रारंभ होता है जिस क्षण हम विश्वास करते हैं, क्योंकि हमारी आत्माओं को नया जीवन दिया जाता है और वे कभी नहीं मरेंगी।

परन्तु विश्वास-कथन के द्वारा अभिपुष्ट अनन्त जीवन का चरित्र कभी-कभी आधुनिक मसीहियों को चकित कर देता है। विशेषकर, विश्वास-कथन देह के पुनरुत्थान के विषय में बात करता है। कभी-कभी, मसीही यह सोचने की गलती करते हैं कि विश्वास-कथन यीशु के पुनरुत्थान की बात कर रहा है। परन्तु ऐसा नहीं है। यीशु के पुनरुत्थान का उल्लेख पहले इन शब्दों में हो चुका है, "तीसरे दिन वह मृतकों में से जी उठा।" विश्वास के इस सूत्र को दोहराया नहीं गया है। बल्कि, जब विश्वास-कथन मृतकों के पुनरुत्थान की बात करता है तो यह बाइबल की उस शिक्षा का उल्लेख कर रहा है कि सब लोगों का न्याय के दिन पुनरुत्थान होगा, और फिर वे अपनी अनन्त मंजिल की ओर बढ़ेंगे, देहरहित आत्माओं के रूप में नहीं बल्कि भौतिक, देहिक प्राणियों के रूप में। यह पवित्र-वचन की अटल शिक्षा है, और यह हजारों वर्षों से कलीसिया में विश्वास के सूत्र के रूप में पाई जाती है।

जिस प्रकार यीशु ने यूहन्ना 5:28-29 में सिखाया था:

> वह समय आता है कि जितने क़ब्रों में हैं वे उसका (पुत्र का) शब्द सुनकर निकल आएँगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे। (यूहन्ना 5:28-29)

उद्धार के विषय में विश्वास-कथन में पाए जाने वाले कथन स्पष्ट रूप से पवित्र-वचन में सिखाए गए हैं और बाइबल पर आधारित सभी कलीसियाओं द्वारा उन्हें स्वीकार किया जाता है। फिर भी, अनेक आधुनिक लोग जो मसीह का अनुसरण करने का दावा करते हैं इन मूल, आधारभूत शिक्षाओं को ठुकरा देते हैं। कुछ लोग हैं जो नकार देते हैं कि परमेश्वर हमें हमारे पापों के लिए जिम्मेवार ठहराता है, और इस

बात पर बल देते हैं कि क्षमा पाना अनावश्यक है। हमारी कलीसियाओं में ऐसे अविश्वासी भी हैं जो सिखाते हैं कि जीवन केवल इसी संसार में है, और कोई “अनन्त” जीवन है तो वह हमारी भौतिक देहों में इसी जीवन तक सीमित है। और ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस भ्रम में विश्वास करते हैं कि हम स्वर्ग में देहरहित आत्माओं में अनन्तता बिताएंगे। ऐसे ही कारणों से प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले विश्वास के सूत्र आज की कलीसिया के लिए उतने ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं जितने कि प्रारंभिक सदियों में थे।

सारांश में, प्रेरितों का विश्वास-कथन परमेश्वर, कलीसिया और उद्धार से संबंधित धर्मशिक्षाओं पर ध्यान देता है। इस श्रृंखला के अन्य अध्यायों में हम और भी अधिक गहराई से इन विषयों पर विचार-विमर्श करेंगे। परन्तु इस समय, हम केवल यह निश्चित करना चाहते हैं कि हम इस विशाल चित्र को समझ लें: कि ये थोड़ी सी धर्मशिक्षाएं इतनी मुख्य और मूलभूत हैं कि उन्होंने सैंकड़ों वर्षों से सफलतापूर्वक मसीहियत की सीमाओं को परिभाषित किया है।

प्रेरितों के विश्वास-कथन की अब तक की हमारी चर्चा में हमने विश्वास-कथन के इतिहास के बारे में बात की है, और इसके धर्मविज्ञान की रूपरेखा प्रदान की है। अब हम हमारे तीसरे बड़े विषय की ओर बढ़ेंगे: प्रेरितों के विश्वास-कथन में सूचीबद्ध विश्वास के सूत्रों का सुचारु महत्व।

महत्व

हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में धर्मशिक्षा-संबंधी कथनों के महत्व के तीन पहलूओं का उल्लेख करेंगे। सबसे पहले, हम स्पष्ट करेंगे कि ये शिक्षाएँ शेष मसीही धर्मविज्ञान के लिए आधारभूत हैं। दूसरा, कलीसिया की संपूर्ण अवधि में इन शिक्षाओं की सार्वभौमिक अभिपुष्टि के बारे में बात करेंगे। और तीसरा, हम विश्वास के इन सूत्रों की एकता प्रकृति के बारे में बात करेंगे। आइए हम प्रेरितों के विश्वास-कथन की धर्मशिक्षाओं की मूल शिक्षाओं पर चर्चा करने के द्वारा शुरु करें।

आधार

अनेक लोग इस तथ्य से परिचित हैं कि विशाल इमारतों को मजबूत आधार या नींव की जरुरत होती है। नींव वह आधार होता है जिस पर शेष इमारत का निर्माण किया जाता है। यह वह लंगर होता है जो इमारत को दृढ़ बनाए रखता है, और जो पूरी संरचना को मजबूती और स्थिरता प्रदान करता है। इफ़िसियों 2:19-21 में पौलुस कलीसिया का उल्लेख प्रेरितों और नबियों पर आधारित बताता है। उसके शब्दों को सुनें:

> तुम अब . . .परमेश्वर के घराने के हो गए हो। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो, जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।
> **(इफ़िसियों 2:19-21)**

मजबूत, सच्ची नींव के बिना, कलीसिया परमेश्वर को सम्मान देने वाली नहीं बन सकती।

इसी रीति से, इसके द्वारा परमेश्वर को सम्मान देने और इसे लोगों के लिए उपयोगी बनाने हेतु मसीही धर्मविज्ञान भी सच्ची धर्मशिक्षाओं और सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। जिस प्रकार यीशु कलीसिया का कोने का पत्थर है, उसी प्रकार उसकी शिक्षाएँ भी धर्मविज्ञान के कोने का पत्थर हैं। और

जिस प्रकार प्रेरित और नबी संसार के समक्ष मसीह का परिचय देने के द्वारा कलीसिया का आधार बनें, उसी प्रकार प्रेरितों का विश्वास-कथन भी धर्मविज्ञान का आधार है क्योंकि यह पवित्र-वचन में निहित प्रेरितों की शिक्षाओं का हमारे समक्ष परिचय करवाता है।

> प्रेरितों के विश्वास-कथन की खूबसूरत बात यह है कि यह आधारभूत मसीही धर्मशिक्षाओं का सार प्रस्तुत करता है जिनकी पुष्टि सभी संप्रदायों के मसीहियों के द्वारा की जानी आवश्यक है। परमेश्वर कौन है, प्रभु यीशु मसीह कौन है, आत्मा का कार्य और यह किस प्रकार उद्धार एवं अंतिम न्याय एवं प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन के समय तक कलीसिया की धर्मशिक्षा में किस प्रकार कार्यरत है। इन मुख्य, मूलभूत मसीही धर्मशिक्षाओं के बिना आप मसीही विश्वास को प्राप्त नहीं कर सकते।
>
> डॉ. स्टीफन वेल्लम

हम प्रेरितों के विश्वास-कथन की आधारभूत प्रकृति पर दो भागों में चर्चा करेंगे। पहला, हम देखेंगे कि यह किस प्रकार उस स्तर को प्रदान करता है जिसके आधार पर अन्य धर्मशिक्षाओं को जांचा जा सके। और दूसरा, हम उस प्रक्रिया की बात करेंगे जिसके द्वारा यह उस तार्किक आधार के रूप में कार्य करता है जिस पर दूसरी धर्मशिक्षाएँ आधारित होती हैं। आइए हम प्रेरितों के विश्वास-कथन को धर्मविज्ञानीय स्तर के रूप में प्रकट करते हुए प्रारंभ करें।

धर्मविज्ञानीय स्तर

प्रेरितों का विश्वास-कथन धर्मशिक्षा-संबंधी स्तर के रूप में कार्य करता है क्योंकि यह मसीहियत के अनेक विशाल और अतिमहत्वपूर्ण विचारों को प्रस्तुत करता है। इन विचारों को पवित्र-वचन में इतनी स्पष्टता के साथ सिखाया गया है कि सब लोगों के द्वारा उन्हें ग्रहण किया जाना चाहिए। इस अध्याय में जिस प्रकार पूर्व में हमने कहा था, ये शिक्षाएँ मसीहियत के लिए मूलभूत हैं।

क्या आपने दूसरों की या जानवरों की आवाज की नकल करने वाले को देखा है? वह इस प्रकार से बोलता है कि इस बात का पता भी नहीं चलता कि वह बोल रहा है। ये लोग कठपुतली का खेल दिखाते हैं, और ऐसा दिखाते हैं कि कठपुतली खेल दिखाने वाले से बात कर रही है। एक दक्ष कलाकार कठपुतली को बिल्कुल जीवित रूप में प्रकट कर सकता है। परन्तु कितनी भी दक्ष कलाकारी क्यों न हो, हम जानते हैं कि यह कठपुतली नहीं परन्तु खेल दिखाने वाला ही बोल रहा है। क्यों?

उत्तर बिल्कुल सीधा है। हम जानते हैं कि कठपुतली जीवित नहीं है, और वह वास्तव में बात नहीं कर सकती। इसलिए जब हम किसी कठपुतली को देखते हैं जो बात करती प्रतीत होती है, तब हम हमारे अनुभव को उस स्तर के अनुसार जाँचते हैं जो हमें पता है कि सत्य है। कितना भी क्यों न लगे कि कठपुतली बात कर रही है, हमारा स्तर हमें बताता है कि दिखावट तो छलावा है। इसलिए हम उस पर विश्वास नहीं करते हैं। हम शायद यह स्पष्ट न कर पाएँ कि किस प्रकार कठपुतली जीवित और बात करती हुई प्रतीत हो सकती है। परन्तु हम जानते हैं कि कोई तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण होना चाहिए जो हमारे स्तर के अनुरूप हो।

उसी प्रकार, प्रेरितों का विश्वास-कथन उन मुख्य विश्वास-धारणाओं का सार प्रदान करता है जिनको हम इतनी मजबूती से पकड़े रहते हैं कि हम उन्हें कभी बदलते नहीं हैं। हम मानते हैं कि बाइबल इन बिंदुओं पर पूरी तरह से स्पष्ट है, और कि वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि हम कभी उन पर समझौता नहीं कर

सकते। इसलिए लोग चाहे कितने ही दृष्टिकोण हमारे समक्ष प्रस्तुत करें, हम उन बातों पर विश्वास नहीं करते जो पवित्र-वचन की इन मुख्य शिक्षाओं के विपरीत होती हैं।

विश्वास-कथन को स्तर के रूप में स्वीकार करना हमें पवित्र-वचन के प्रति विश्वासयोग्य बनाए रखने में मदद करता है जब झूठे शिक्षक पूरी तैयारी के साथ हमें गलत धर्मविज्ञान सिखाने की कोशिश करते हैं। हम ऐसे कई लोगों से मिले होंगे, जो अपने तर्क-वितर्क में बहुत निपुण होते हैं, जिससे कि हम उनकी बातों पर विश्वास करने लगते हैं, तब भी जब वे गलत या झूठ बोल रहे हों। इसलिए उन मुख्य विश्वास-धारणाओं को यहां सूचीबद्ध करना सहायक रहेगा जो हमें पवित्र-वचन की शिक्षाओं में मजबूत कर सकती है। और प्रेरितों का विश्वास-कथन हमें वह मजबूती प्रदान करता है।

उदाहरणत: ऐसी कई झूठी शिक्षाएँ हैं जिनका प्रत्युत्तर कलीसिया ने अपने प्रारंभिक दिनों में दिया था। उनमें से एक ज्ञानवाद था। अन्य बातों के अतिरिक्त ज्ञानवाद ने सिखाया था कि हमारी भौतिक देह बुरी है, और उद्धार का अर्थ है हमारी आत्माओं को हमारे शरीरों से मुक्त करवा देना। अब, प्रारंभिक कलीसिया के सब लोग तो इस गलती को गलत सिद्ध करना नहीं जानते थे। परन्तु वे जो प्रेरितों के विश्वास-कथन में प्रशिक्षित थे, इस झूठी शिक्षा को इस आधार पर साहस के साथ नकार सके कि पवित्र-वचन देह के पुनरुत्थान के विषय में सिखाता है। अर्थात्, यह सिखाता है कि यीशु हमें हमारे पूर्ण व्यक्तित्व के साथ छुड़ाने असया था, केवल हमारी आत्माओं को ही नहीं बल्कि हमारे शरीरों को भी।

हम में से अनेक चतुराई भरे तर्क-वितर्कों से असमंजस में पड़ जाते हैं या भ्रांतिपूर्ण आंकड़ों से भटक जाते हैं। अब हम इन निष्कर्षों के द्वारा हमेशा जो गलत है उसे ठीक नहीं कर सकते। परन्तु फिर भी हम उन बातों को साहस के साथ नकार सकते हैं जो प्रेरितों के विश्वास-कथन के विपरीत होती हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि विश्वास-कथन पवित्र-वचन पर आधारित है।

निःसंदेह, हम प्रेरितों के विश्वास-कथन या विश्वास के किसी अन्य कथन को पवित्र-वचन के स्तर तक उठाना नहीं चाहते। मात्र बाइबल ही है जिस पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता। और यदि प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले विश्वास के सूत्र भी यदि पवित्र-वचन के विपरीत पाए जाते हैं तो उन्हें भी ठुकरा दिया जाना चाहिए। परन्तु प्रेरितों का विश्वास-कथन कलीसिया के प्रारंभ से ही समय की परीक्षा में सफल रहा है। इसने स्वयं को बार-बार बाइबल के सटीक प्रतिनिधि के रूप में दर्शाया है। इसलिए इस आधुनिक संसार में हम जिन धर्मशिक्षाओं का सामना करते हैं उनको परखने के लिए इसका इस्तेमाल करने में हमें आत्म-विश्वास महसूस करना चाहिए।

एक उपयोगी धर्मशिक्षा-संबंधी स्तर के रूप में प्रेरितों के विश्वास-कथन के प्रयोग के बारे में चर्चा करने के उपरांत, हम इसके अन्य बुनियादी पहलूओं के बारे में चर्चा करने के लिए आगे बढ़ेंगे: अन्य धर्मविज्ञानीय दृष्टिकोणों के तार्किक आधार के रूप में इसका प्रयोग।

तार्किक आधार

विचारों के बीच तार्किक संबंध नदी और उसके स्रोत अथवा उद्‌गम के बीच संबंध के समान होता है। तार्किक रूप से आधारभूत विचार नदी के उद्‌गम-जल के समान होते हैं। वे अन्य विचारों के स्रोत हैं। और तार्किक रूप से आश्रित विचार उस नदी के समान होते हैं जो उस उद्‌गम से बहते हैं। इसलिए, जब हम कहते हैं कि एक विचार दूसरे विचार के लिए तार्किक आधार का कार्य करता है, तो हमारा अर्थ यह है कि हम एक विवेकपूर्ण तर्क की रचना कर सकते हैं जो एक तार्किक आधारभूत विचार से अन्य विचारों की स्थापना करता है जो तार्किक रूप से आश्रित होते हैं। उदाहरण के तौर पर, प्रेरितों का विश्वास-कथन परमेश्वर पिता के बारे में स्पष्ट रूप से बहुत ही कम बात करता है। इसमें मात्र यह कहा गया है:

> मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,
> जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है।

परन्तु ये धर्मशिक्षाएं अनेक अन्य बातों के तार्किक आधार की रचना करती हैं जिन पर परमेश्वर के बारे में विश्वास करते हैं। उदाहरण के तौर पर, इस आधार पर कि परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, हम यह भी विश्वास करते हैं कि आकाश और पृथ्वी पर उसका संपूर्ण अधिकार है, और कि मूल सृष्टि अच्छी थी, और कि प्राकृतिक संसार को देखने के द्वारा हम परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं।

हम एक वृक्ष को देखने के द्वारा भी तार्किक रूप से आधारभूत धर्मशिक्षाओं के महत्व को दर्शा सकते हैं। हम धरती को पवित्र-वचन मान सकते हैं जिस पर धर्मविज्ञान का वृक्ष उगता है। वृक्ष का तना और इसकी विशाल शाखाएं सबसे आधारभूत धर्मशिक्षाओं को प्रस्तुत करती हैं। ये केवल पवित्र-वचन पर आधारित और आश्रित हैं। परन्तु जब विशाल शखाएं अन्य छोटी-बड़ी शाखाओं में विभाजित हो जाती हैं तो वे उन धारणाओं को अपनाने लगती हैं जो तार्किक रूप से बड़ी शाखाओं से बहती हैं। और जब हम वृक्ष पर लगे पत्तों की ओर देखते हैं, तो हम उन विचारों को निहारते हैं जो छोटी शाखाओं पर आश्रित होते हैं। जब हम इसे इस प्रकार चित्रित करते हैं, तो प्रेरितों के विश्वास-कथन से प्रारंभ करने का महत्व स्पष्ट हो जाता है। पहले हमें बड़ी धर्मशिक्षाओं को सीखना है जिससे वृक्ष का आकार सही हो और पवित्र-वचन में मजबूती से स्थापित हो।

यह हमारे लिए दो कार्य करता है। पहला, यह हमारी धर्मविज्ञानीय प्रणालियों में निहित अनेक भिन्न-भिन्न धारणाओं के बीच संबंध को पहचानने में हमारी सहायता करता है। और दूसरा, यह हमें उन धर्मशिक्षाओं के बारे में सोचने में सहायता करता है जो उन रूपों में पवित्र-वचन से दूर होती हैं, जो इन कम महत्वपूर्ण विचारों का मूलभूत धारणाओं के साथ सामंजस्य बिठाती है।

> प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाई जाने वाली धर्मशिक्षाएं मसीही सत्य के सार को स्पष्ट करती हैं। प्रेरितों के विश्वास-कथन का उद्‌गम वास्तव में दूसरी सदी में हुआ; दूसरी सदी में इसने कई आकार लिए और अंत में इसने वह आकार लिया जो आज हमारे पास है। और यहां त्रिएकता, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, है। यहां यीशु मसीह का देहधारण और प्रायश्चित की मृत्यु और विजयी पुनरुत्थान और द्वितीय आगमन भी है। यहां पापों की क्षमा है। यहां मसीह में नया जन्म पाए लोगों की संगति के रूप में कलीसिया की वास्तविकता है। और मैं सोचता हूँ कि किसी भी कलीसिया में समय-समय पर प्रेरितों के विश्वास-कथन पर मनन करने और इन धर्मशिक्षाओं के महत्व को दर्शाने से बेहतर और कुछ न होगा।
>
> डॉ. जे. आई. पेकर

अब जब हमने इसकी बुनियादी प्रकृति के विषय में प्रेरितों के विश्वास-कथन के महत्व पर चर्चा कर ली है, तो हम इसकी शिक्षाओं की सार्वभौमिक पुष्टि का वर्णन करने के लिए तैयार हैं।

सार्वभौमिक

तथ्यों के सत्य को जांचने का एक तरीका यह देखना है कि अलग-अलग गवाह उसके बारे में क्या कहते हैं। जितने अधिक गवाह किसी विचार के सत्य की ओर ईशारा करते हैं, उतना अधिक हम उस पर विश्वास करते हैं। यही बात धर्मविज्ञान में भी लागू होती है। जब हम यह निर्णय लेने का प्रयास करते हैं कि हमें किस पर विश्वास करना चाहिए, यह जानना सहायक होगा कि इतिहास में अन्य लोगों ने किस बात पर

विश्वास किया है, और इसके साथ-साथ आधुनिक संसार में लोग किस बात पर विश्वास करते हैं। और जब प्रेरितों के विश्वास-कथन की बात आती है, तो इसके धर्मशिक्षा-संबंधी कथनों की अधिकांश मसीहियों ने अधिकांश स्थानों पर पुष्टि की है।

हम तीन ऐतिहासिक समयों के विभाजन में प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले विश्वास के सूत्रों की सार्वभौमिक प्रकृति की जांच करेंगे। पहला, हम देखेंगे कि ये धारणाएं नए नियम में स्थापित हैं। दूसरा, हम देखेंगे कि कलीसिया के संपूर्ण इतिहास में अधिकांश मसीहियों ने इसकी पुष्टि की है। और तीसरा, हम देखेंगे कि किस प्रकार वे वर्तमान में कलीसिया के चरित्र में निरंतर पाई जाती हैं। आइए हम नए नियम और इसके द्वारा इन धर्मशिक्षाओं की निरंतर पुष्टि के साथ प्रारंभ करें।

नया नियम

कलीसिया के प्रारंभिक दिनों से ही मसीह और प्रेरितों की शिक्षाओं के विषय पर असहमतियां रही हैं। इनमें से कुछ असहमतियां कलीसिया के बाहर उत्पन्न हुईं और कुछ कलीसिया के भीतर। उदाहरण के तौर पर, पौलुस ने निरंतर यहूदी मसीहियों के विरोध में लिखा जो मांग कर रहे थे कि गैरयहूदी मसीहियों का खतना किया जाए, जैसा कि गलातियों के अध्याय 5 में पाया जाता है। और पतरस की दूसरी पत्री के दूसरे अध्याय में पतरस चेतावनी देता है कि कलीसिया में झूठे शिक्षक पाए जाएंगे। नया नियम यीशु मसीह और चेलों के द्वारा अनेक लोगों के गलत विचारों को सुधारने के उदाहरणों से भरा हुआ है।

और कलीसिया में पाई जाने वाली भ्रांत शिक्षाएं बहुत खतरनाक होती हैं जब मुख्य धारणाएं खतरे में पड़ जाती हैं। इसलिए यीशु और नए नियम के लेखक धर्मविज्ञान के मूल बिंदुओं के प्रति पाई जाने वाली गलतियों को सुधारने में तत्पर थे। और महत्वपूर्ण बात यह है कि जब उन्होंने अपने सुधार प्रदान किए, तो वे एक दूसरे से पूरी तरह सहमत थे। इस समय में कलीसिया में पाई जाने वाली अनेक झूठी शिक्षाओं के बावजूद भी नया नियम अपने में अटल धर्मशिक्षा-संबंधी एकता दर्शाता है।

> यह तथ्य कि कलीसिया ने इन पुस्तकों द्वारा बनाये गए मापदंड (कैनन) की स्थापना की- जिसमें वास्तव में कलीसिया को कई सदियां लगी, अतः यह कोई तेज प्रक्रिया नहीं थी- दर्शाता है कि कलीसिया द्वारा लिया गया निर्णय यह है कि इसमें एक केन्द्रिय एकता पाई जाती है। यह कोई ऐसी बात नहीं है जिसको हम सरलता से नजरअंदाज कर सकते हैं, पिछले 2000 वर्षों से कलीसिया के भीतर विद्वानों का यह निर्णय रहा है। और जब हम नए नियम के लेखनों में केन्द्रिय एकता के बारे में बात करते हैं, तो आपको यह भी मानना पड़ेगा कि उनके बीच दृष्टिकोणों की भिन्नता भी पाई जाती है। मैं सोचता हूँ कि मुख्य सक्रिय विषय यह है कि दृष्टिकोणों की भिन्नता वास्तव में धर्मशिक्षा-संबंधी दावों के प्रति विरोधाभास नहीं दिखाती। इससे आपको भिन्न दृष्टिकोण, भिन्न महत्व, वास्तविकता के बारे में भिन्न प्रकार की बातें, वास्तविकता के भिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी मिलती है। परन्तु कम से कम मेरे नजरिए में नए नियम की भिन्न पुस्तकों के बीच स्पष्ट विरोधाभास नहीं पाया जाता।
>
> डॉ. डेविड बौर

इस एकता के प्रकाश में, जब नया नियम प्रेरितों के विश्वास-कथन में सूचीबद्ध विश्वास के सूत्रों की पुष्टि करता है, तो यह कहना उचित है कि यह ऐसा सार्वभौमिक रूप से करता है। यह नियमित रूप से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के परमेश्वरत्व चरित्र के पक्ष में तर्क देता है, और इसके साथ-साथ इस बात पर भी बल देता है कि मात्र एक ही परमेश्वर है। सुसमाचार मसीह के गर्भधारण, जन्म, जीवन, सेवकाई,

मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले तथ्यों को प्रस्तुत करता है। और नए नियम की पुस्तकें कलीसिया और उद्धार के विषय में विश्वास-कथन के कथनों को पूर्ण समर्थन प्रदान करती हैं।

नए नियम पर चर्चा करने के बाद, आइए देखें कि संपूर्ण इतिहास में इन धारणाओं ने किस प्रकार मसीहियत को चारित्रित किया है।

कलीसिया इतिहाश्

नए नियम की कलीसिया के समान, आगामी सदियों की कलीसिया ने भी अनेक प्रकार के धर्मविज्ञानों को प्रदर्शित किया। कई छोटे-बड़े विषयों में भी उनमें एकता नहीं थी। परन्तु मुख्य धर्मशिक्षाओं, जैसे कि प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले विश्वास के सूत्रों, को सबके द्वारा ग्रहण किया गया व उनकी पुष्टि की गई। और ऐसे विषयों में जहां इन मूलभूत धारणाओं को कुछ लोगों के द्वारा ठुकराया गया, उनको कलीसिया और इतिहास ने विभाजनकारी और झूठे शिक्षकों के रूप में घोषित किया।

उदाहरण के तौर पर चौथी ईस्वी की घटनाओं पर ध्यान दें। उस समय प्रेरितों के विश्वास-कथन के प्रारंभिक रूप प्रचलन में थे। इतिहास के इस समय में, कई झूठी शिक्षाएं उत्पन्न हुई जिन पर कलीसिया ने अपनी परिषदों में चर्चा की। इनमें से कुछ स्थानीय परिषदें थीं, परन्तु कइयों को सार्वभौमिक परिषदें भी माना जाता है क्योंकि उनमें पूरे संसार की कलीसियाओं के अनेक भागों के बिशप शामिल थे। उदाहरण के तौर पर, नीसिया की परिषद (325 ई.) और कोन्सटैन्टीनोपल की परिषद (381 ई.) सार्वभौमिक परिषदें थीं जिनमें प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले विश्वास के कई सूत्रों के विषयों में चर्चा की गई।

आधुनिक नाइसीन विश्वास-कथन की प्रथम रूपरेखा 325 ईस्वी में नीसिया की परिषद में बनाई गई, और यह अपने आधुनिक आकार में 381 ईस्वी में कोन्स्टैन्टीनोपल की परिषद में पहुंचा। यह विशालत: प्रेरितों के विश्वास-कथन अभिव्यक्ति और विस्तृत रूप है, जिसका उद्देश्य विश्वास-कथन की गलत व्याख्या को रोकने के लिए इसके कई विचारों को स्पष्ट करना था।

उदाहरण के तौर पर, ज्ञानवाद नामक भ्रांत या झूठी शिक्षा ने सिखाया था कि बाइबल के परमेश्वर जिसने इस संसार की सृष्टि की थी, उसकी स्वयं की रचना किसी अन्य ईश्वर के द्वारा हुई थी। ज्ञानवाद जैसी झूठी शिक्षाओं की प्रेरितों के विश्वास-कथन ने खुले रूप से निन्दा की थी, अत: नाइसीन विश्वास-कथन ने प्रेरितों के विश्वास-कथन के उद्देश्य को और अधिक स्पष्ट बनाने के लिए इसमें और अधिक जोड़ा।

विशेषकर, जहां प्रेरितों का विश्वास-कथन केवल यह कहता है, “मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है” वहीं नाइसीन विश्वास-कथन ने यह विस्तृत कथन प्रदान किया: हम एक परमेश्वर, सर्वसामर्थी पिता, में विश्वास करते हैं, जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है, और सब दृश्य और अदृश्य वस्तुओं का। यहां चार बातों पर ध्यान दीजिए:

पहला, नाइसीन विश्वास-कथन, प्रेरितों के विश्वास-कथन पर आधारित है। प्रेरितों के विश्वास-कथन को अपने विश्वास-कथन का आधार बनाने के द्वारा सार्वभौमिक नाइसीन परिषद ने दर्शाया कि कलीसिया ने सार्वभौमिक रूप से प्रेरितों के विश्वास-कथन की पुष्टि की।

दूसरा, नाइसीन विश्वास-कथन “मैं” के स्थान पर “हम” शब्द से प्रारंभ होता है। जहां प्रेरितों के विश्वास-कथन का उद्देश्य बपतिस्मा के समय पर विश्वास का व्यक्तिगत उच्चारण था, वहीं नाइसीन विश्वास-कथन एक ऐसा कथन था कि कलीसिया ने इन धर्मशिक्षाओं पर सार्वभौमिक एवं सामूहिक रूप से सहमति जताई।

तीसरा, नाइसीन विश्वास-कथन ने "परमेश्वर" शब्द से पहले "एक" जोड़कर स्पष्टता प्रदान की। इसने उस बात को खुलकर सामने रखा जिसका आशय प्रेरितों के विश्वास-कथन ने रखा था: कि मात्र एक ही परमेश्वर है।

और चौथा, नाइसीन विश्वास-कथन ने इस बात को भी स्पष्ट किया कि परमेश्वर ने सब वस्तुओं की रचना की है, अदृश्य की भी जैसे कि आत्माएँ। इसने इस बात को भी स्पष्ट किया कि स्वयं परमेश्वर की रचना नहीं की गई थी। यह बिंदु प्रेरितों के विश्वास-कथन में निहित था, और नाइसीन विश्वास-कथन ने मात्र इस विषय को स्पष्ट किया था।

इस प्रकार की पुष्टियाँ और स्पष्टीकरण अन्य परिषदों और धर्मविज्ञानियों द्वारा सदियों से नियमित रूप से दिए जाते रहे हैं। कभी-कभी परिषदों के निर्णयों को सब कलीसियाओं के द्वारा स्वीकार नहीं किया गया। एक परिषद ने कुछ कलीसियाओं के दृष्टिकोणों की निन्दा की, तो दूसरी परिषद ने अन्य कलीसियाओं के दृष्टिकोणों की निन्दा की। परन्तु अधिकांश विषयों में, इन विवादों के दोनों ओर की कलीसियाओं ने प्रेरितों के विश्वास-कथन के मूल सिद्धांतों की पुष्टि करना जारी रखा।

इसी कारणवश, प्रेरितों के विश्वास-कथन को सामान्यत: मसीही विश्वास के सबसे आधारभूत और सबसे अधिक सार्वभौमिक कथन के रूप देखा जाता है। केवल नाइसीन विश्वास-कथन ने ही प्रेरितों के विश्वास-कथन को संपूर्ण इतिहास में सार्वभौमिक रूप से ग्रहण किया है। परन्तु नाइसीन विश्वास-कथन उतना आधारभूत नहीं है। इसमें अनेक धर्मविज्ञानीय कथन पाए जाते हैं जिसको प्राय: धर्मविज्ञानी भी गलत समझ लेते हैं। इसीलिए हमने मसीही विश्वास की मुख्य शिक्षाओं के अध्ययन के लिए आधार के तौर पर प्रेरितों के विश्वास-कथन का चयन किया है।

अब तक हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन के साथ नए नियम की सार्वभौमिक सहमति की ओर इशारा किया है, और संपूर्ण कलीसिया इतिहास में इसकी धर्मशिक्षाओं को स्वीकार करने का उल्लेख किया है। अब हम वर्तमान के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि यही धारणाएँ आज भी मसीही कलीसिया के चरित्र में पाई जाती हैं।

वर्तमान

प्रत्येक युग में, झूठे शिक्षकों ने उन आधारभूत धारणाओं को नकारा है जिनको कलीसिया ने सदियों से थामे रखा है। आधुनिक संसार में, झूठे समूह जैसे जेहोवास विटनैसेस (यहोवा के साक्षी) और मोरमोन्स अपने आपको मसीही मानते हैं क्योंकि वे बाइबल को स्वीकार करते हैं और कुछ विषयों में मसीह का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं। परन्तु वे सच्चे रूप से मसीही नहीं हैं क्योंकि उन आधारभूत धारणाओं का इनकार करते हैं जिन्होंने दो हजार वर्षों से मसीहियत की सीमाओं को परिभाषित किया है- वे धारणाएँ जो प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले विश्वास के सूत्रों में पाई जाती हैं। कुछ ऐसी कलीसियाएँ भी हैं जिन्हें झूठे समूह तो नहीं माना जाता, परन्तु वे इन आधारभूत शिक्षाओं का इनकार करती हैं, और ऐसा ही कुछ मसीही कलीसियाओं में पाए जाने वाले कुछ लोग भी करते हैं।

परन्तु यदि इतने अधिक लोग प्रेरितों के विश्वास-कथन में सूचीबद्ध धर्मशिक्षाओं को ठुकरा देते हैं, तो हम कैसे कह सकते हैं कि यह विश्वास-कथन सार्वभौमिक रूप से आज की कलीसिया को चारित्रित करता है? इसका उत्तर द्विरूपीय है। पहली बात यह है कि अधिकांश कलीसियाएँ जो मसीही होने का दावा करती हैं, वे इन धर्मशिक्षाओं की पुष्टि करती हैं। सब प्रकार के पारंपरिक प्रोटेस्टेंट्स, बैपटिस्ट्स, मैथोडिस्ट्स, लूथरन्स, एंग्लीकन्स, प्रेस्बिटेरियन्स इत्यादि, द्वारा इन्हें सिखाया और इन पर विश्वास किया जाता है। इनकी पुष्टि गैर-प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं, जैसे रोमन कैथोलिक कलीसिया, ईस्टर्न ओरथोडोक्स कलीसियाओं, द्वारा भी की जाती है।

इसके अतिरिक्त, वे कलीसियाएँ जो इन धर्मशिक्षाओं का इनकार करती हैं उन्हें "मसीही" नहीं कहा जाना चाहिए। चाहे वे बाइबल को मानते हैं और मसीह का अनुसरण करने का दावा करते हैं, वे वास्तव में पवित्र-वचन या ऐतिहासिक कलीसिया की शिक्षाओं को ग्रहण नहीं करते। और इसी कारणवश वे सच्चे रूप से मसीही नहीं हैं।

> जब आप प्रेरितों के विश्वास-कथन में अभिव्यक्त धर्मशिक्षाओं के महत्व के बारे में सोचते हैं, तो ये बातें कलीसिया के जीवन और सुसमाचार के प्रति हमारी समझ और मसीह में हमारे अपने उद्धार की समझ के लिए अत्यावश्यक हैं। उदाहरण के तौर पर, विश्वास-कथन हमारे समक्ष परमेश्वर की त्रिएक प्रकृति की घोषणा करते हैं: परमेश्वर पिता है, परमेश्वर पुत्र है, और परमेश्वर पवित्र आत्मा है। इसलिए यदि हमें मसीही बनना है, तो हम यह दिखावा नहीं कर सकते कि त्रिएकता की धर्मशिक्षा हमारे विश्वास के ऊपर सुन्दर सी छोटी अतिरिक्त परत है, जैसे कि यह इसको अतिरिक्त ऊर्जा प्रदान करती है। इसकी अपेक्षा त्रिएकता की धर्मशिक्षा वह कथन है जो बताता है कि अपने तत्व में हमारा परमेश्वर कौन है।
>
> डॉ. स्टीव ब्लैकमोरे

> मैं कहूँगा कि प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाई जाने वाली धर्मशिक्षाएँ मसीहियत के लिए आवश्यक एवं आधारभूत हैं। और वास्तव में, यदि आप इनसे भटक जाते हैं, तो आप ऐतिहासिक मसीही विश्वास से विमुख हो जाते हैं। वह प्रारंभिक कलीसिया का अनुभव है, उन्होंने पाया कि अनेक प्रकार के भिन्न तरीके थे जिनमें बाइबल की व्याख्या की जा सकती थी और उन्होंने कहा, "यह सही तरीका है।" यह रेल की पटरियों के समान है: "यह सही माध्यम है जिसमें बाइबल की व्याख्या की जानी है।" इस मार्ग से जाओ और आप मूलभूत मसीही विश्वास से भटक रहे हैं। और इसलिए आज तक प्रेरितों का विश्वास-कथन, मैं सोचता हूँ, बाइबल पर आधारित आधिकारिक विश्वास की मूलभूत प्रकृति को परिभाषित करता है।
>
> डॉ. पीटर वॉकर

क्योंकि प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाली धारणाएँ इतनी बुनियादी और सार्वभौमिक हैं, वे विश्वासियों में एकता के भाव उत्पन्न करती हैं। यह आज विशेषकर महत्वपूर्ण है क्योंकि आधुनिक कलीसिया में काफी विभाजन पाया जाता है।

एकता में बांधना

शायद आप कुछ सच्चे मसीहियों से मिले होंगे जो धर्मविज्ञान सीखने का विरोध करते होंगे क्योंकि वे आश्वस्त हैं कि धर्मशिक्षा मसीहियों को केवल विभाजित ही करती है। वे औपचारिक धर्मविज्ञान के प्रति इस विरोध को इस प्रकार के नारों के साथ फैलाते हैं: "यीशु हमें एक करता है, परन्तु धर्मशिक्षा हमें विभाजित करती है।" इस बात में कुछ हद तक सच्चाई भी है। सदियों से मसीही एक दूसरे से विभाजित रहे हैं, उन्होंने एक दूसरे की निन्दा की है, एक दूसरे को सताया है और यहां तक कि धर्मशिक्षा के विषयों पर एक दूसरे से युद्ध भी किए हैं। फिर भी, नया नियम आज भी कलीसिया को धर्मशिक्षा के विषय पर एकता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लाने का प्रयास करने को उत्साहित करता है। उदाहरण के तौर पर, इफ़िसियों 4:11-13 में हम यह पढ़ते हैं:

> उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से . . .मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएं (इफ़िसियों 4:11-13)।

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने कलीसिया को मसीह की देह कहा है। और उसने दर्शाया है कि कलीसिया तब तक मसीह में परिपक्वता के स्तर तक नहीं पहुंच सकती जब तक हम विश्वास और ज्ञान में एक न हो जाएं। इसी कारणवश, धर्मशिक्षा-संबंधी एकता प्रत्येक मसीही का लक्ष्य होना चाहिए।

निःसंदेह, हमारे मसीही जीवन के कई अन्य पहलूओं को भी धर्मशिक्षा के हमारे अध्ययन को प्रभावित करना चाहिए। हमें ऐसे कार्य करने चाहिए जैसे कि परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करना, पवित्रता का प्रयास करना, पवित्र आत्मा की सामर्थ पर निर्भर रहना, और परमेश्वर और उसके वचन पर मनन करना। जब हम केवल धर्मशिक्षा पर ही ध्यान देते हैं और अन्य बातों की उपेक्षा करते हैं, तो हम बुरी तरह से भटक जाते हैं। जिस प्रकार प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 13:2 सचेत करता है:

> और यदि मैं . . . सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ . . . परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं (1 कुरिन्थियों 13:2)।

जिस प्रकार यह और कई अन्य पद दर्शाते हैं, धर्मविज्ञानीय ज्ञान प्राप्त करना महत्वपूर्ण है, परन्तु यह मसीही विश्वास का महानतम सद्‌गुण नहीं है।

धर्मविज्ञानीय विवाद के विनाशकारी परिणामों से बचने का सबसे प्रभावशाली उपाय उस धर्मशिक्षा-संबंधी एकता में प्रसन्न होना है जो हम मसीह के पूरी दुनिया के अनुयायियों के साथ बांटते हैं। जब हम धर्मविज्ञान के विवरणों के हमारे उद्देश्य का एकता के उद्देश्य के साथ संतुलन बिठाते हैं, तो धर्मशिक्षा हमें विभाजित करने की अपेक्षा एकता में बांध सकती है।

> यीशु मसीह की कलीसिया आज एकता के विषय में काफी चिंतित है। हमारे बीच बहुत सारे संप्रदाय पाए जाते हैं और पवित्र आत्मा, स्त्रियों, बपतिस्मा आदि पर हमारे भिन्न दृष्टिकोण हैं। फिर भी ऐसा लगता है कि आज 21वीं सदी में हम सत्य के आधार की अपेक्षा कार्य, पूरी दुनिया में सुसमाचार फैलाने, के आधार पर एक होने के प्रति अधिक चिंतित हैं। यह काफी रूचिकर है कि हमारे प्रभु यीशु मसीह और प्रेरित पौलुस, जब वे एकता के बारे में सोचते है- मैं यूहन्ना रचित सुसमाचार के अध्याय 17 और इफिसियों की पत्री के अध्याय 4 के बारे में बात कर रहा हूँ- तो वे उस एकता के बारे में सोच रहे हैं जो हमें हमारे एक परमेश्वर, एक प्रभु, एक आत्मा, एक बपतिस्मा से मिलती है। और इसलिए ये सत्य हैं, या सत्य की देह है जिसमें हम विश्वास करते हैं, जो मसीह में हमारी एकता की बुनियाद होनी जरूरी है।

डॉ. सैमूएल लिंग

पूरी दुनिया में मसीह के लाखों सच्चे अनुयायी हैं जो प्रेरितों के विश्वास-कथन में अभिव्यक्त बाइबल पर आधारित मुख्य शिक्षाओं के प्रति दृढ़ समर्पित हैं। वास्तव में, इस क्षण अनेक मसीही इस समर्पण के कारण ही सताव और शहादत को झेल रहे हैं। अनेक धर्मविज्ञानीय विषयों पर शायद वे हमसे असहमत होंगे। हो सकता है कि वे उन दृष्टिकोणों का विरोध करें जिनको हम बहुत प्रिय मानते हैं। परन्तु हमारी भिन्नताओं के बावजूद भी हम उन बातों में एक साथ हैं जो विश्वास-वचन परमेश्वर, कलीसिया और उद्धार के बारे में कहता है। याद करें कि यीशु ने यूहन्ना 17:23 में क्या प्रार्थना की थी:

> “वे एक होकर सिद्ध हो जाएं, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझसे प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।” (यूहन्ना 17:23)

ध्यान दें कि यीशु ने कहा था कि कलीसिया में एकता इस बात का प्रमाण थी कि उसे पिता ने भेजा है। जब हम धर्मविज्ञानीय रूप से साझी बात पर बल देते हुए मसीह के अन्य अनुयायियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते हैं, तो हम संसार के समक्ष यह साक्षी देते हैं कि सुसमाचार सत्य है, और यह हमारे सुसमाचार-प्रचार को बल प्रदान करता है।

> सुसमाचार को परिभाषित करने और सुसमाचार के साझे स्थान पर खड़ा होने को सहमत होने के बाद, मैं सोचता हूँ कि एकता और सत्य का अनुसरण करने का एक तरीका यह कहना है कि हम उस एकता के प्रति समर्पित हैं जो सुसमाचार में पाई जाती है, कि हम एक-दूसरे के साथ जीवन और सेवकाई में एकता रखने का प्रयास करेंगे, इस तरह से कि हम एक दूसरे से हमारे सत्य के बोध को त्याग देने को नहीं कहेंगे। परन्तु हम उन बातों में भी आनन्द मनाएंगे जिनमें हम एक-दूसरे से भिन्न मत रखते हैं। हम एक-दूसरे से आदरपूर्वक भिन्न मत रखते हैं। हम एक-दूसरे से बुद्धिमान रूप से भिन्न हैं। हम एक-दूसरे से प्रेमपूर्ण रूप से भिन्न हैं। परन्तु हम एक-दूसरे में सत्य और बोधगामी स्तर पर उन बातों की तलाश करते हैं जिनमें हमारा साझा आनन्द हो। और हम एक सीमा तक उन बातों में आनन्द मनाते हैं ताकि हमारे बीच धर्मविज्ञानीय बोधों के अन्य क्षेत्रों में वैध और खराईपूर्ण भिन्नताएं हों।
>
> डॉ. जे. लिगन डंकन

प्रेरितों का विश्वास-कथन मूलभूत धारणाओं और कम महत्वपूर्ण धारणाओं के बीच सारे मसीहियों की सहायता कर सकता है। जब हम हमारे व्यक्तिगत और कलीसिया के सामूहिक जीवन में इस विश्वास-कथन पर बल देते हैं, तो हम पाएँगे कि धर्मविज्ञान वास्तव में हमें एक-दूसरे से विभाजित नहीं करता है। इसकी अपेक्षा, हम पाएँगे कि हम मसीह के अन्य विश्वासयोग्य सेवकों के साथ एकता में बंध रहे हैं, और अपनी कलीसिया के लिए यीशु के अपने दर्शन को पूरा कर रहे हैं।

निष्कर्ष

प्रेरितों के विश्वास-कथन के विश्वास के सूत्रों का परिचय देते हुए, इस अध्याय में हमने विकास और उद्देश्य के आधार पर विश्वास-कथन के बारे में चर्चा की है। हमने परमेश्वर, कलीसिया और उद्धार के आधार पर इसकी धर्मशिक्षाओं का एक संक्षिप्त ब्यौरा प्रदान किया है। और हमने उनके बुनियादी,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सार्वभौमिक और एकतापूर्ण प्रकृति के आधार पर विश्वास के उसके सूत्रों के महत्व का भी उल्लेख किया है।

प्रेरितों का विश्वास-कथन इतना महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रलेख है जिसने सैंकड़ों वर्षों से मुख्य मसीही धारणाओं का सार प्रदान किया है। और आज भी यह प्रत्येक संप्रदाय के मसीही धर्मविज्ञानियों को एकता में बांधने का शुरुआती बिंदु प्रदान करता है। इस श्रृंखला के आगामी अध्यायों में हम और अधिक विवरणों के साथ प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले विश्वास के सूत्रों की गहराई से जांच करेंगे, यह देखते हुए कि वे किस प्रकार से पवित्र-वचन के उन सत्यों को प्रस्तुत करते हैं, जो पूरी दुनिया में मसीही शिक्षा को एकता में बाँधते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।